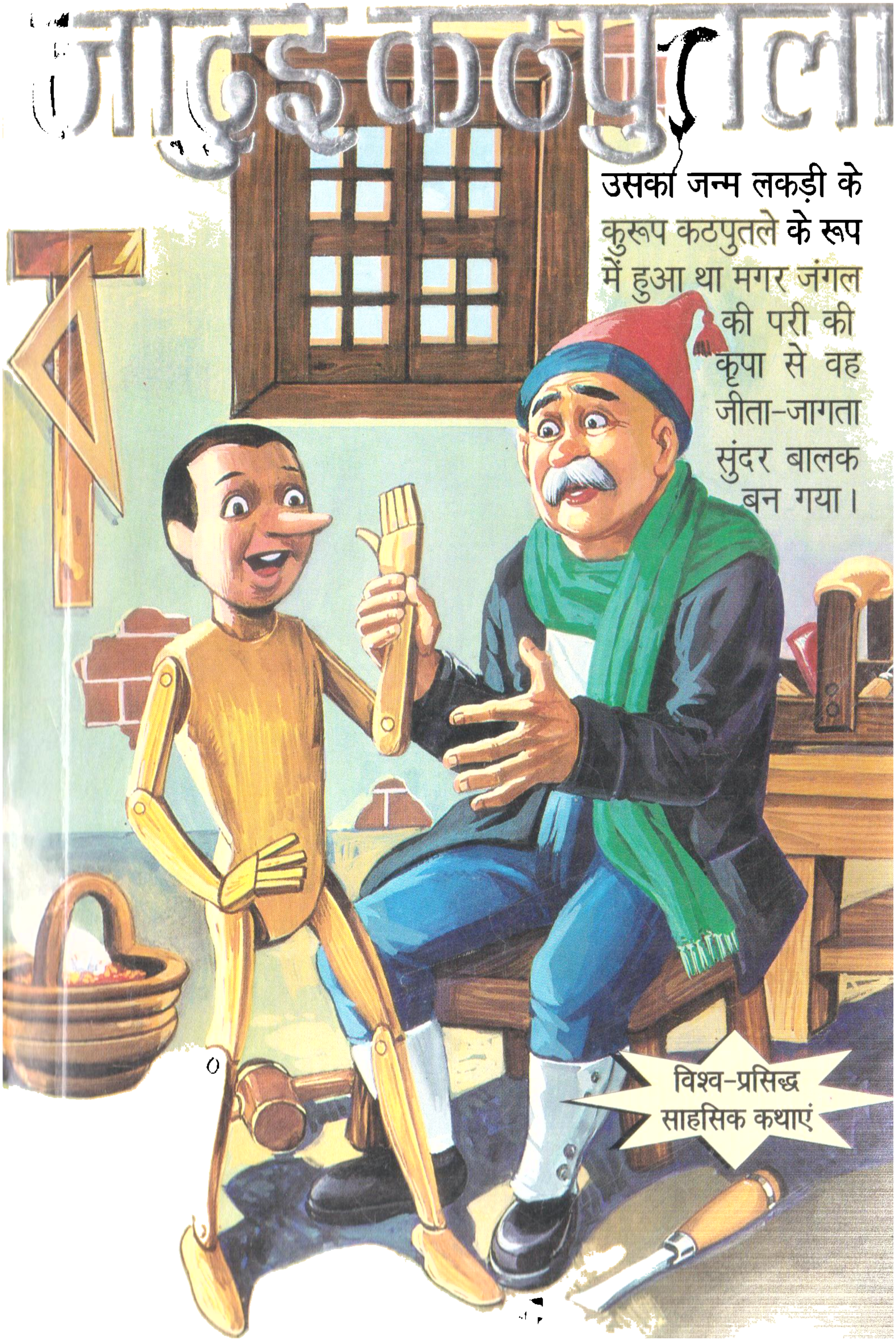
जादुई कठपुतला


उसका जन्म लकड़ी के कुरूप कठपुतले के रूप में हुआ था मगर जंगल की परी की कृपा से वह जीता-जागता सुंदर बालक बन गया।
विश्व-प्रसिद्ध साहसिक कथाएं

जादुई कठपुतला

प्रसिद्ध उपन्यासकार कार्लो कोलोदी के लोकप्रिय
उपन्यास 'पिनोकियो' का सरल हिंदी रूपांतरण

लेखक

कार्लो कालोदी

रूपांतरकार

रमेश चौधरी

राजा पॉकेट बुक्स

330/1, बुराड़ी, दिल्ली–110084

नवीन संस्करण : 2011

● **जादुई कठपुतला** : कार्लो कालोदी

ISBN : 81-7604-219-6

प्रकाशक :
राजा पॉकेट बुक्स
330/1, मेन रोड, बुराड़ी,
दिल्ली-110084
फोन : 27611410, 27611038, 27612036, 27612039
फैक्स : 27611227
ई-मेल : rajam@nda.vsnl.net.in

शोरूम (होलसेल व रिटेल बिक्री केंद्र)
राजा पॉकेट बुक्स
112, फर्स्ट फ्लोर, दरीबा कलां,
दिल्ली-110006
फोन : 23251092, 23251109

मुद्रक :
संजय प्रिंटर्स एंड पब्लिशर प्रा.लि.
180, FIE, पटपड़गंज इंड.एरिया, दिल्ली-110092

₹ : 40/-

दो शब्द

प्रस्तुत बाल उपन्यास **'जादुई कठपुतला'** प्रसिद्ध उपन्यासकार कार्लो कालोदी की रचना **'पिनोकियो'** का सरल हिन्दी रूपांतर है। रोचक और आश्चर्यचकित कर देने वाली कथावस्तु होने के कारण इस प्रसिद्ध बाल उपन्यास का विश्व की कई अन्य भाषाओं में अनुवाद हो चुका है। हिन्दी भाषी बाल पाठकों के लिए हम इसका सरल और सुबोध शैली में अनुवाद प्रस्तुत कर रहे हैं, ताकि हिन्दी के पाठक भी इस विश्वस्तरीय मनोरंजक रचना का आनंद ले सकें।

यह कहानी पिनोकियो नामक कठपुतले की है, जो कि बिल्कुल मनुष्य की तरह बातचीत और हरकतें करता है। वह अपने पिता, जो उसका निर्माण करते हैं, से तंग आकर घर से भाग जाता है। उसके पिता उसकी तलाश में भटकते रहते हैं और उसकी तलाश करते-करते एक कुत्ता मछली का शिकार बन जाते हैं। पिनोकियो भी घर से भागकर तरह-तरह के दुख उठाकर समझ जाता है कि दुनिया कैसी है और वह अपने पिता से मिलने के लिए तड़प उठता है। अपने पिता की खोज में वह भी उसी कुत्ता मछली का शिकार बन जाता है। अंत में पिनोकियो एक परी की मदद से सचमुच का बालक बन जाता है और अच्छे बच्चों की तरह पिता का कहना मानने का प्रण करता है।

'विश्व प्रसिद्ध साहसिक कथाएं' सीरीज का यह उपन्यास भी अन्य उपन्यासों की तरह अत्यंत रोचक, प्रेरक और रोमांचकारी है। रोचक कथावस्तु, प्रेरक घटनाओं और सुरुचिपूर्ण चित्रों से भरपूर होने के कारण इस सीरीज के सभी उपन्यास बच्चों के मन-मस्तिष्क पर सच्चाई, ईमानदारी, कर्तव्यनिष्ठा और बहादुरी की अमिट छाप डालकर उनके सर्वांगीण विकास का मार्ग प्रशस्त करते हैं। इस सीरीज के सभी उपन्यास आप अपने मित्रों, सम्बन्धियों और बच्चों को उपहार के रूप में दे सकते हैं। इस सीरीज के सभी उपन्यास बच्चों के लिए आपके द्वारा दिया गया एक अनमोल उपहार साबित होगा।

हमें आशा ही नहीं, वरन दृढ़ विश्वास है कि हमारा यह प्रयास आपको पसंद आएगा। फिर भी हमारा यह प्रयत्न आपको कैसा लगा, कृपया पत्रों द्वारा सूचित करें, ताकि हम भविष्य में भी इसी प्रकार आपका सार्थक मनोरंजन करने में समर्थ हो सकें।

प्रकाशक

जादुई कठपुतला

वह बड़ा हंसमुख व्यक्ति था। उसका नाम जेपेत्तो था, लेकिन मोहल्ले के बच्चे उसे हलुवा कहकर चिढ़ाया करते थे।

सुबह-सुबह उसने बूढ़े बढ़ई एंटोनियो की दुकान का दरवाजा खटखटाया तो एंटोनियो ने उसे अंदर बुला लिया। अंदर आकर उसने एंटोनियो का अभिवादन किया।

"आओ जेपेत्तो, कैसे आना हुआ?"

"मैं एक काम से तुम्हारे पास आया हूं, एंटोनियो चाचा।"

"किस काम से?"

"मेरे मन में एक बात आई है।"

"क्या बात आई है, तुम्हारे मन में?"

"यह कि मैं लकड़ी का एक सुंदर-सा पुतला बनाऊं।"

"लेकिन पुतला बनाकर तुम क्या करोगे, जेपेत्तो?"

"मैं उस कठपुतले से तरह-तरह के खेल लोगों को दिखाया करूंगा। उसे लेकर मैं पूरी दुनिया में घूमूंगा। इससे मैं अपनी रोजी-रोटी कमाऊंगा।"

"शाबाश ! यह तो बहुत ही बढ़िया बात सोची है तुमने, हलुवा।"

जेपेत्तो यह शब्द सुनकर भड़क उठा। सुबह-सुबह कोई उसे चिढ़ाए, यह बात वह कैसे पसंद करता?

"तुम मुझे चिढ़ा रहे हो।" उसने गुस्से में एंटोनियो की ओर देखा—"हलुवा कहकर।"

"मैंने तुम्हें हलुवा नहीं कहा।" एंटोनियो ने अपनी सफाई देते हुए कहा।

"तुमने नहीं कहा तो और किसने कहा है? तुम्हारे अलावा और कोई दूसरा व्यक्ति तो यहां है भी नहीं। दूसरा तो यहां मैं ही हूं। तुम समझते हो कि मैं स्वयं अपने आपको चिढ़ाऊंगा।"

"लेकिन मैंने तुम्हें ऐसा नहीं कहा जेपेत्तो।" एंटोनियो ने फिर कहा, लेकिन जेपेत्तो यह मानने के लिए तैयार नहीं हुआ और एंटोनियो के साथ झगड़ने लगा।

कुछ देर तक दोनों एक-दूसरे से झगड़ते रहे, लेकिन किसी तरह यह झगड़ा शांत हुआ। एंटोनियो ने उसकी नाराजगी दूर करने के प्रयास में उसकी ओर देखते हुए कहा—"तो तुम कठपुतला बनाना चाहते हो, जेपेत्तो, जिसके खेल दिखाकर रोटी कमा सको।"

"हां।"

"लेकिन इसके लिए तुम मेरे पास क्यों आए हो? तुम्हें मुझसे क्या काम हो सकता है?"

"कठपुतला बनाने के लिए मुझे थोड़ी-सी लकड़ी चाहिए, जो मेरे पास नहीं है, लेकिन तुम्हारे पास तो ऐसी कोई फालतू लकड़ी जरूर होगी?"

"हां।" एंटोनियो ने फौरन कहा—"मेरे पास है।"

"क्या वह मुझे दे सकते हो?"

"जरूर दे दूंगा।" कहकर बूढ़ा एंटोनियो उठा और लकड़ी का वह टुकड़ा उठा लिया, जो उसने अभी-अभी, जेपेत्तो के आने से ठीक पहले कोने में फेंका था।

लकड़ी का वह टुकड़ा एंटोनियो उसे देना ही चाहता था कि वह टुकड़ा एंटोनियो के हाथ से छूटकर जेपेत्तो की टांगों से जा टकराया।

जेपेत्तो ने चीखते हुए कहा—"यह क्या किया, तुमने तो मेरा पैर ही तोड़ दिया होता। इतनी जोर से मारा है।"

"नहीं।" एंटोनियो ने कहा—"मैंने मारा नहीं, यह तो अपने आप ही..."

"वाह...! लकड़ी अपने आप ही तुम्हारे हाथों से निकलकर मेरे पैरों में आ लगेगी। खूब...?"

"ऐसा ही हुआ है।"

"तुम झूठ बोलते हो।"

"तुमने मुझे झूठा कहा?" इस बार एंटोनियो भी बिगड़ गया।

"तुम हो ही झूठे।"

"झूठे तुम होगे, मैं नहीं। चले जाओ यहां से।"

जेपेत्तो बूढ़े एंटोनियो के बारे में न जाने क्या-क्या बड़बड़ाता हुआ वापस चला गया और लकड़ी के उस टुकड़े को अपने साथ ही लेता गया। इसमें बूढ़े एंटोनियो का कोई दोष नहीं था।

यूं दोष तो जेपेत्तो का भी नहीं था। हां इतना जरूर था कि बूढ़ा एंटोनियो लकड़ी के उस टुकड़े से अपना पिंड छुड़ाना चाहता था।

बच्चो, तुम यह कहोगे कि यह तो बड़ी अजीब बात है, बूढ़ा एंटोनियो लकड़ी के उस टुकड़े से अपना पिंड क्यों छुडाना चाहता था।

हां, यह बात अजीब-सी ही थी।

किस्सा कुछ यूं था—

उस दिन सुबह-सुबह बूढ़ा एंटोनियो कुछ परेशान था। उसे एक छोटी मेज की मरम्मत करनी थी, जिसकी एक टांग टूटी हुई थी और उसकी परेशानी का कारण यह था कि इसके लिए उसे कोई लकड़ी नहीं मिल रही थी।

वह इसी उलझन में फंसा हुआ अपनी दुकान में गया तो दुकान के एक कोने में उसे लकड़ी का एक टुकड़ा यूं ही बेकार में पड़ा नजर आया।

बूढ़े एंटोनियो की आंखों में चमक उभर आई—"लो।" उसने अपने आपसे कहा—"मैं बेकार ही परेशान हो रहा था। लकड़ी के इस टुकड़े से तो मेज की एक टांग आराम से बन सकती है।"

उसने लकड़ी का वह टुकड़ा उठाया। उसे उलट-पुलटकर देखा। फिर अपने आपको आश्वस्त करते हुए कहा—"बिल्कुल ठीक रहेगा।"

इसके बाद बूढ़े एंटोनियो ने अपने बढ़ईगीरी के औजारों को इकट्ठा करके अपने पास रखा और लकड़ी के उस टुकड़े को लेकर काम करने के लिए बैठ गया।

उसने अपना बसूला उठाया तथा लकड़ी के उस टुकड़े को काट-छांट करके ठीक करने के इरादे से उस पर बसूला चलाने लगा। उसी समय एक अजीब बात हुई। एंटोनियो ने जैसे ही बसूला चलाया, उसे एक आवाज सुनाई दी।

"धीरे से।"

बूढ़े एंटोनियो ने इधर-उधर देखा। उसे कहीं कोई नजर नहीं आया। दुकान में तो वह अकेला ही था। उसके पास उसके औजारों के अतिरिक्त और कुछ था ही नहीं।

'फिर यह आवाज किसकी थी?' वह कुछ पल तक सोचता रहा। फिर उसने सोचा कि यह उसका वहम था या फिर उसके कान बज रहे थे।

वह फिर से अपने काम में लग गया।

लेकिन तभी वह बारीक-सी आवाज फिर सुनाई दी। जैसे कोई रोते हुए कह रहा हो—"नहीं...नहीं। इतनी जोर से मत मारो। मुझे बहुत चोट लग रही है।"

बूढ़ा एंटोनियो अचम्भे में पड़ गया। उसके आसपास तो कोई था ही नहीं। फिर यह आवाज उसे क्यों सुनाई दे रही है और कुछ समझ में न आने के कारण बूढ़ा एंटोनियो खीझ-सा गया। खीझकर वह जल्दी-जल्दी लकड़ी पर बसूला चलाने लगा।

उसने लकड़ी को छीलकर ठीक कर लिया। अब उसे चिकना करना था। उसने रेगमार पेपर उठाया तथा लकड़ी पर रगड़ने लगा।

उसी समय उसे हंसी का स्वर सुनाई दिया—"ही-ही, इस तरह तो मुझे बहुत गुदगुदी हो रही है।"

एंटोनियो ने बड़ी फुर्ती से लकड़ी का वह टुकड़ा दूर फेंक दिया। जैसे कोई खतरनाक चीज उसके हाथ में आ गई हो। इतना ही नहीं, वह उछलकर खड़ा हो गया। फिर वह फटी-फटी आंखों से लकड़ी के उस टुकड़े की ओर देखने लगा।

यह आवाज लकड़ी के उसी टुकड़े से आई थी। एंटोनियो को इस पर विश्वास करना मुश्किल हो रहा था।

'लकड़ी का वह टुकड़ा भी कहीं बोल सकता है।' वह मन ही मन कह रहा था।

लेकिन जो कुछ उसने अपने कानों से सुना था, आंखों से देखा था, उस पर विश्वास भी कैसे न करे?

उसी समय जेपेत्तो वहां पहुंचा था। उसने दरवाजा खटखटाया तो एंटोनियो का ध्यान दरवाजे की ओर चला गया। उसने कहा—"आ जाओ।"

जेपेत्तो अंदर आ गया।

· फिर अंदर क्या हुआ, यह तो तुमने सुन ही लिया बच्चो।

इस तरह बूढ़े बढ़ई एंटोनियो ने लकड़ी का वह टुकड़ा जेपेत्तो को देकर अपना पिंड छुड़ा लिया।

हंसमुख जेपेत्तो, जिसे बच्चे हलुवा कहकर चिढ़ाया करते थे, एक बहुत ही गरीब आदमी था। उसका दड़बेनुमा कमरा एक मकान के निचले हिस्से में था, जहां रोशनी भी सीढ़ियों के रास्ते ही अंदर पहुंचती थी।

एक टूटी-सी खाट, एक सड़ी-सी कुर्सी व एक मेज, जिसकी सारी चूलें डगर-डगर हिलती थीं और एक अंगीठी जिसमें आग जल रही होती थी, लेकिन वह अंगीठी भी सचमुच की नहीं, बल्कि तस्वीर जेपेत्तो की संपत्ति थी।

अपने उसी कमरे में पहुंचकर जेपेत्तो ने अपने औजार संभाले और काम करने बैठ गया। काम भी वही, लकड़ी का पुतला बनाने का।

जेपेत्तो गरीब आदमी था, शायद इसीलिए वह सोच रहा था कि जब उसका पुतला बनकर तैयार हो जाएगा तो वह उसका नाम पिनोकियो रखेगा, क्योंकि पिनोकियो एक बहुत ही धनी व्यक्ति का नाम था।

जेपेत्तो का मानना था कि उसका पुतला भी उसके लिए ढेर सारा धन कमाएगा और एक दिन वह भी धनी हो जाएगा, पिनोकियो की ही तरह।

इसी तरह सोचते-सोचते जेपेत्तो ने पुतले का सिर, माथा और आंखें बना डालीं, लेकिन उसे यह देखकर बहुत आश्चर्य हुआ कि उसकी पुतलियां इस प्रकार चल रही थीं, जैसे सचमुच की आंखें हों।

उसने पुतले की ओर देखा तो ऐसा लगा जैसे उसकी आंखें एकटक उसी की ओर देख रही हों। उसे बड़ा आश्चर्य हो रहा था। उसके मुंह से निकला—"लकड़ी के पुतले की आंखें मेरी ओर क्यों इस तरह घूर रही हैं?" लेकिन इस बात का उसे कोई उत्तर नहीं मिला।

वह फिर से अपने काम में व्यस्त हो गया।

आंखें बनाने के बाद जेपेत्तो पुतले की नाक बनाने लगा, लेकिन इस बार एक अजीब बात यह हुई कि, पुतले की नाक बहुत ही लंबी हो गई, जबकि वह उसकी नाक इतनी लंबी नहीं बनाना चाहता था।

वह काट-छांट करके पुतले की नाक को छोटी करने लगा, लेकिन वह और भी



लंबी हो गई। फिर उसने झुंझलाकर नाक को वैसा ही छोड़ दिया और मुंह बनाने लगा, लेकिन इस बार तो कमाल ही हो गया। अभी पुतले का मुंह पूरा बना भी नहीं था कि अचानक ही पुतला ही-ही करके हंसने लगा।

जेपेत्तो को गुस्सा आ गया। वह पुतले को डांटते हुए बोला—"हंस क्यों रहे हो? चुप रहो।"

पुतला इस तरह चुप हो गया जैसे वह डांट खाकर डर गया हो। जेपेत्तो फिर अपने काम में लग गया। अब जेपेत्तो पुतले का बाकी हिस्सा बना रहा था।

मुंह के बाद उसकी गरदन, दोनों हाथ और पैर बना डाले, लेकिन हाथ बनते ही पुतले ने जेपेत्तो की टोपी उतारी और उसके बाल खींचने शुरू कर दिए। जेपेत्तो ने घूरकर उसकी ओर देखा—"मेरी टोपी इधर लाओ।"

लेकिन पुतले ने टोपी वापस लौटाने के बजाए स्वयं ही अपने सिर पर रख ली। जेपेत्तो को बहुत गुस्सा आया। गुस्से में उसने कई थप्पड़ पुतले को जड़ दिए और फिर उसकी टांगें बनाने लगा, लेकिन जैसे ही उसकी दोनों टांगें व पैर बनकर तैयार हुए, पुतले ने उछलकर अपने पैर की ठोकर जेपेत्तो की नाक पर जड़ दी।

जेपेत्तो को चोट लगी तो वह क्रोध से आग-बबूला हो उठा। वह पुतले को उसकी बदतमीजी का मजा चखाना चाहता था, लेकिन फिर यह सोचकर चुप रह गया कि अभी उसने भी तो पुतले को कई थप्पड़ लगाए थे।

अब पुतला बनकर तैयार हो चुका था।

जेपेत्तो उसे चलना सिखाने लगा। जेपेत्तो को इसमें ज्यादा मेहनत नहीं करनी पड़ी। वह बहुत जल्दी ही चलना सीख गया।

चलना ही नहीं, वह दौड़ना भी सीख गया।

जेपेत्तो खुशी से उसे कमरे में दौड़ते हुए देख रहा था। तभी वह दौड़ते हुए दरवाजे की ओर गया और फिर बाहर की ओर भागने लगा। जेपेत्तो ने चौंकते हुए उसकी ओर देखा, फिर चीखते हुए कहा—"अरे, कहां जा रहे हो। रुको।"

लेकिन पुतला नहीं रुका।

जेपेत्तो उसके पीछे दौड़ा, लेकिन पुतला उससे भी ज्यादा तेज गति से दौड़ रहा था। फिर जेपेत्तो ने उन लोगों की ओर देखते हुए चीखकर कहा, जो पुतले को दौड़ते हुए देख रहे थे—"पकड़ो इसे।"

लेकिन लोगों को तो यह देखने में मजा आ रहा था। उनमें से किसी ने भी उसे नहीं पकड़ा।

यह शोर-शराबा एक पुलिस मैन ने सुना तो वह उधर आया। उसने पुतले का रास्ता रोक लिया। पुतला पुलिस मैन को भी छकाकर उसकी टांगों के बीच से निकल जाना चाहता था, लेकिन पुलिस मैन के हाथ में उसकी नाक आ गई, क्योंकि उसकी नाक बहुत लंबी थी।

तभी जेपेत्तो भी वहां आ गया। उसने पुतले की ओर देखा—"तुम बहुत शरारती हो गए हो।" जेपेत्तो ने उसे डांटते हुए कहा—"अभी तुम्हारे कान खींचता हूं।"

लेकिन तभी जेपेत्तो को याद आया कि उसके कान बनाना तो वह भूल ही गया था। उसने आगे बढ़कर उसकी गरदन पकड़ी और जोर-जोर से हिलाने लगा।

भीड़ के सामने जेपेत्तो का यह व्यवहार पुतले को अच्छा नहीं लगा। उसने अपने आपको बहुत ही अपमानित महसूस किया। वह जेपेत्तो की पकड़ से छूटकर जमीन पर लेट गया और रोने लगा।

तब तक भीड़ और भी बढ़ चुकी थी। लोगों को भी जेपेत्तो का यह व्यवहार अच्छा नहीं लगा। उनकी सहानुभूति भी काठ के उस पुतले के प्रति हो गई।

"यह घर जाना नहीं चाहता तो तुम इसके साथ क्यों जबरदस्ती करते हो?" लोगों ने कहा—"छोड़ क्यों नहीं देते बेचारे को।"

लेकिन जेपेत्तो ने लोगों की परवाह नहीं की।

फिर उन्होंने पुलिस मैन को समझाया—"यह आदमी लकड़ी के इस पुतले के साथ ज्यादती कर रहा है। यह इसे जान से मार डालेगा। इसे इसकी पकड़ से छुड़ाओ।"

पुलिस मैन ने पिनोकियो को जेपेत्तो की पकड़ से छुड़वा दिया, लेकिन इतने पर भी लोगों को शायद सब्र नहीं हुआ। लोगों के कहने पर जेपेत्तो को गिरफ्तार कर लिया गया। उसने बहुत खुशामद की, गिड़गिड़ाया, लेकिन जेपेत्तो की किसी ने नहीं सुनी।

पुलिस मैन जेपेत्तो को गिरफ्तार करके ले जाने लगा तो वह रोने लगा। पिनोकियो की ओर देखते हुए उसने कहा—"अरे बेवकूफ, यह तूने क्या कर दिया। मैंने तुझे कितने प्यार से बनाया था। मैं तुझे एक बहुत अच्छा पुतला बनाना चाहता था, लेकिन तू तो बहुत ही शैतान निकला। तूने तो मुझे जेल भिजवा दिया।"

लेकिन जेपेत्तो के इस प्रकार रोने पर भी पिनोकियो नहीं पसीजा। उसने उसकी कोई परवाह ही नहीं की और जैसे ही पुलिस मैन ने उसे छोड़ा, वह भाग गया। पुलिस मैन जेपेत्तो को जेल ले जाने लगा।

उसके बाद पिनोकियो वापस उसी कमरे में पहुंचा। उसने कमरे का दरवाजा अंदर से बंद कर लिया तथा बैठकर आराम करने लगा।

तभी उसे कमरे के अंदर ही गाने की आवाज सुनाई दी। पिनोकियो को उस समय गाना सुनना अच्छा नहीं लग रहा था। उसने चारों ओर देखा तो उसे पता चला कि गाना गाने वाला एक झींगुर था, जो उसी कमरे में मौजूद था।

पिनोकियो को झींगुर पर बहुत गुस्सा आया। उसने झींगुर की ओर देखते हुए कहा—"मेरे कमरे में आकर तुम्हें इस तरह से चिल्लाने की जरूरत नहीं है। यहां से चले जाओ और मुझे आराम करने दो।"

झींगुर ने हैरत से उसकी ओर देखा—"क्या कहा तुमने? तुम्हारा कमरा? यह तुम्हारा कमरा है?"

"हां। यह मेरा ही कमरा तो है।"

"जिसे तुम अपना कमरा कह रहे हो, यहां मैं पिछले कई साल से रह रहा हूं।" झींगुर ने कहा—"फिर भी तुम कहते हो तो मैं चला जाता हूं, लेकिन जाने से पहले मेरी एक बात सुनो।"

"क्या?"

"जो बच्चे तुम्हारी तरह घर से भागते हैं, वे दुनिया में कभी कुछ नहीं बन सकते। उन्हें बाद में बहुत पछताना पड़ता है और वे बहुत बुरे बच्चे बनते हैं।"

"रहने दो।" पिनोकियो ने कहा—"मुझे पट्टी मत पढ़ाओ। तुम्हारी बातों में आया तो मुझे पढ़ने के लिए भेज दिया जाएगा। मुझे खेलने नहीं दिया जाएगा।"

"तुम मेरी बात नहीं समझ सकते, क्योंकि...।" झींगुर ने कहा—"तुम एक पुतले हो और लकड़ी के बने हुए हो।"

झींगुर की यह बात सुनकर पिनोकियो को बहुत गुस्सा आया। उसने हथोड़ी उठाकर झींगुर की ओर फेंक मारी। हथोड़ी झींगुर के सिर में लगी और वह मर गया।

यह देखकर पिनोकियो को बड़ा दुख हुआ। वह झींगुर को जान से नहीं मारना चाहता था, लेकिन अब तो वह मर चुका था। पिनोकियो उसी के लिए दुखी हो रहा था, लेकिन तभी उसे महसूस हुआ कि वह बहुत भूखा है।

इसके बाद तो वह दुखी होना भूल गया।

उसने कमरे में इधर-उधर देखा कि कुछ खाने को मिल जाए, लेकिन उसे वहां खाने को कुछ नजर नहीं आया। फिर उसने पूरे कमरे की तलाशी ले डाली, लेकिन पिनोकियो को खाने की कोई चीज नहीं मिली।

पिनोकियो बहुत परेशान हुआ, लेकिन तभी उसकी नजर कोने में पड़े हुए एक अंडे पर पड़ी तो उसने खुश होते हुए उस अंडे को उठा लिया।

इसके बाद पिनोकियो ने आग जलाई और आमलेट बनाने की तैयारी करने लगा। सारी तैयारी करने के बाद पिनोकियो ने अंडे को तोड़ा, लेकिन जैसे ही अंडा टूटा, एक चूजा अंडे से उछलते हुए बाहर निकला और फिर पिनोकियो के हाथों से फिसलता हुआ खिड़की पर जा बैठा।

पिनोकियो उसकी ओर देखता ही रह गया। इतना ही नहीं, चूजे ने पिनोकियो को नमस्कार किया और उसको धन्यवाद भी दिया। जबकि पिनोकियो तो उस समय बहुत ही दुखी हो रहा था।

चूजे ने एक बार फिर पिनोकियो की ओर देखा। उसने पिनोकियो से विदा ली और अपने पंख फड़फड़ाकर बाहर जाने के लिए उड़ गया।

अब तो पिनोकियो के खाने के लिए वहां कुछ भी नहीं था। वह भूख से मरा जा

रहा था कि अब यहां उसे खाने के लिए कुछ नहीं मिलेगा। इसलिए वह सिसक-सिसककर रोने लगा।

अब उसे झींगुर की सीख याद आ रही थी। झींगुर ठीक ही कह रहा था। इस तरह घर से भागकर उसने गलती की थी। वह ऐसा न करता तो इस समय पापा उसके साथ होते। वे उसके खाने का कोई न कोई प्रबंध जरूर करते।

लेकिन अब क्या हो सकता था। उसने सोचा कि अब तो बाहर ही चलना ठीक होगा। शायद कोई उस पर दया करके उसे खाने के लिए रोटी दे सके।

•

घर से बाहर निकलकर तो पिनोकियो और भी बड़ी मुसीबत में फंस गया था। बाहर बर्फीली आंधी चल रही थी। वातावरण बहुत ही ठंडा हो रहा था, लेकिन भूख के सामने पिनोकियो को यह मुसीबत उतनी बड़ी नहीं लग रही थी।

वह रोटी की तलाश में निकल गया।

लेकिन ऐसी बर्फीली ठंड में अपने मकानों को खुले रखने की बेवकूफी भला कौन करता। गलियां सूनी पड़ी थीं। पिनोकियो रोटी मांगे भी तो किससे? वह बहुत निराश हो चला था। तभी उसे एक मकान की खिड़की खुली नजर आई। उससे प्रकाश बाहर आ रहा था।

उसी खिड़की के नीचे खड़े होकर पिनोकियो ने आवाज लगाई तो एक बूढ़े ने खिड़की से झांककर देखा—"कौन हो भाई? क्यों चिल्ला रहे हो?"

"मुझे बहुत जोर की भूख लगी है।" पिनोकियो ने रुआंसे स्वर में कहा—"मुझे कुछ खाने के लिए दे दो।"

"अभी देता हूं, तुम्हें कुछ खाने के लिए।" बूढ़े ने व्यंग्यपूर्ण स्वर में कहा तो पिनोकियो की आंखों में आशा की चमक उभर आई।

बूढ़ा समझ रहा था कि यह कोई शरारती लड़का है, जो यूं ही रात को उसे तंग करने चला आया।

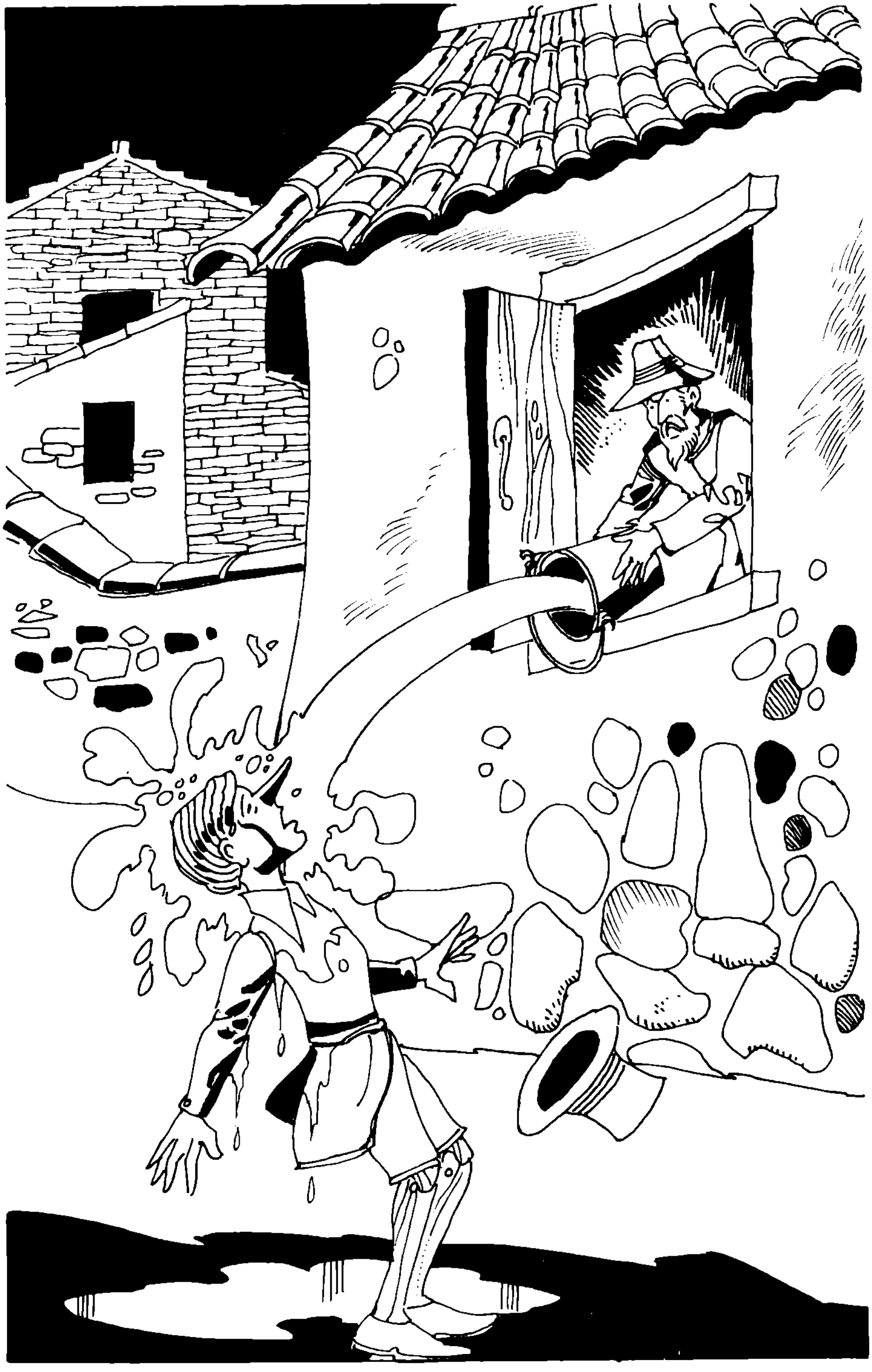
कुछ पल बाद ही बूढ़ा फिर खिड़की पर नजर आया—"चलो, मैं तुम्हारे खाने के लिए कुछ लाया हूं।"

पिनोकियो खुश हो गया। उसने अपनी टोपी फैला दी। इस आशा के साथ कि उसकी टोपी में खाने के लिए कुछ टपक पड़ेगा और वह आराम से अपनी भूख मिटाएगा।

लेकिन यह क्या?

बूढ़े ने उसके ऊपर ठंडे पानी की एक पूरी बाल्टी उलट दी। पिनोकियो सिर से पांव तक ठंडे पानी में भीग गया। ऐसी कड़ाके की ठंड और ऊपर से ठंडा पानी।

पिनोकियो मारे ठंड के सिहर उठा। उसकी आंखों में आंसू आ गए। उसका पूरा जिस्म ठंड से कंपकंपा रहा था।



फिर जैसे-तैसे वह वापस अपने घर पहुंचा। उसने दरवाजा अंदर से बंद कर लिया। उस समय मारे ठंड के उसका बुरा हाल था और पांव तो जैसे बर्फ की तरह जमकर सुन्न हो गए थे।

पैरों को अंगीठी की ओर करके वह लेट गया। अंगीठी की गर्मी से उसके पैरों को कुछ राहत मिली। फिर धीरे-धीरे उसके पूरे जिस्म में गर्माई आ गई और वह सो गया।

लेकिन उसके पैरों तक अंगीठी की आग पहुंच गई और वे आग से सुलगने लगे। पिनोकियो को इसका पता ही नहीं चल सका। धीरे-धीरे उसके पैर जलकर राख हो गए।

सुबह होने पर किसी ने दरवाजा खटखटाया। पिनोकियो की आंख खुल गई।

"कौन है?" उसने लेटे-लेटे ही पूछा।

"मैं हूं, दरवाजा खोलो।" यह जेपेत्तो की आवाज थी।

"ओह पापा! ठहरो, मैं दरवाजा खोलता हूं।" पिनोकियो ने कहा। फिर उसी क्षण पिनोकियो ने उछलकर खड़े हो जाना चाहा, लेकिन इस प्रयास में वह मुंह के बल जमीन पर गिरा। तब उसे पता चला कि उसके पैर ही गायब हो चुके हैं।

"दरवाजा अभी खोला क्यों नहीं तुमने?" जेपेत्तो ने फिर कहा।

"मैं दरवाजा नहीं खोल सकता पापा।" पिनोकियो ने रुआंसे स्वर में कहा।

"क्यों नहीं खोल सकते?"

"मेरे पैर नहीं हैं, पापा।"

"क्या हुआ पैरों को?"

"कोई खा गया?"

"कौन?"

"बिल्ली खा गई।" पिनोकियो ने कहा। क्योंकि उसी क्षण एक बिल्ली पिनोकियो को दिखाई दी तो उसने यही कह दिया।

"देखो, मजाक मत करो पिनोकियो दरवाजा खोलो।"

"लेकिन मैं दरवाजा कैसे खोलूं, पापा?" पिनोकियो रो पड़ा—"मैं चल नहीं सकता।"

इस बार जेपेत्तो को लगा कि कोई गड़बड़ जरूर है। फिर वह किसी तरह खिड़की के रास्ते से अंदर आया। उस समय वह बहुत गुस्से में था, लेकिन पिनोकियो का हाल देखकर उसे बहुत दुख हुआ। उसे पिनोकियो पर दया आई और झुककर उसे गले से लगा लिया।

"तुम्हारे पैर कैसे जल गए मेरे बच्चे?"

उत्तर में पिनोकियो ने रात की पूरी घटना जेपेत्तो को बता दी। जेपेत्तो को बहुत दुख हुआ। वह यह भी जान गया कि पिनोकियो अभी तक भी भूखा है।

उसके पास तीन आड़ू थे। वे उसने अपनी जेब से निकालकर पिनोकियो को दे दिए। फिर जेपेत्तो के देखते-देखते वह तीनों आड़ू अपने हलक में नीचे उतार गया।

"इससे तो कुछ भी नहीं हुआ, पापा।" उन्हें खाने के बाद पिनोकियो ने कहा—"मैं तो अब भी उतना ही भूखा हूं।"

"लेकिन इस समय मेरे पास और कुछ नहीं है, जिसे मैं तुम्हें खाने के लिए दे सकूं।"

जेपेत्तो ने यह कहा तो पिनोकियो अपने पैरों को देखकर रोने लगा।

"अब तो मैं चल भी नहीं सकता, पापा। तुम मेरे लिए नए पैर ला दो न पापा।"

"नहीं।" जेपेत्तो ने कहा—"अब मैं तुम्हारे लिए नए पैर नहीं बनाऊंगा।"

"ऐसा क्यों कह रहे हो पापा ?"

"इसलिए कि नए पैर बनते ही तुम फिर पहले की तरह भाग जाओगे।"

"नहीं पापा।" उसने कहा—"अब मैं कभी ऐसा नहीं करूंगा। हमेशा तुम्हारा कहा मानूंगा। मैं अच्छा लड़का बनूंगा पापा और स्कूल भी जाया करूंगा।"

"ठीक है, तो मैं तुम्हारे नए पैर बना दूंगा।" जेपेत्तो ने कहा तो पिनोकियो खुश हो गया।

फिर कुछ ही देर में जेपेत्तो ने उसके पैर बनाए और फिर उसकी ओर देखते हुए कहा—"अब तुम सो जाओ।"

पिनोकियो सो गया।

उसके सो जाने पर जेपेत्तो ने चुपके से गोंद द्वारा उसके पैर चिपका दिए, लेकिन पिनोकियो सोया कहां था? वह तो बस सोने का अभिनय कर रहा था और जैसे ही उसके पैर लगे, वह उछलकर खड़ा हो गया और मारे खुशी के नाचने लगा।

फिर उसने कहा—"लेकिन स्कूल जाने के लिए मेरे पास तो कपड़े भी नहीं हैं, पापा।"

जेपेत्तो ने सुंदर-सुंदर फूलों वाले कागज लेकर उनसे पिनोकियो के लिए कपड़े बनाए और उसे पहना दिए। फिर कागज की ही टोपी बनाकर उसके सिर पर रख दी।

पिनोकियो अब बहुत सुंदर लग रहा था।

"मैं स्कूल तो चला जाऊंगा, पापा, लेकिन वहां पढ़ूंगा कैसे? मेरे पास तो किताबें भी नहीं हैं।"

जेपेत्तो सोच में पड़ गया। फिर उसने कहा—"ठीक है, मैं तेरे लिए किताब भी ला दूंगा।"

इसके बाद जेपेत्तो बाहर चला गया। कुछ देर बाद वह वापस लौटा तो उसके हाथ में एक किताब थी। उसे उसने पिनोकियो की ओर बढ़ा दिया।

"यह लो पिनोकियो, मैं तुम्हारे लिए किताब भी ले आया।" उस समय जेपेत्तो के पास वह कोट नहीं था, जिसे पहनकर वह बाहर निकला था।

"तुम्हारा कोट कहां गया, पापा?" पिनोकियो ने पूछा।

"उसे मैंने बेच दिया।"

"बेच दिया?"

"हां, वह कोट पहनकर मुझे बहुत गर्मी लगती थी न, इसलिए मैंने सोचा कि क्यों न उसे बेच दिया जाए।"

लेकिन पिनोकियो समझ गया कि वह कोट इसलिए नहीं बेचा गया कि उसमें गर्मी लगती है। बल्कि इसलिए बेचा गया ताकि उसके लिए किताब खरीदी जा सके।

पिनोकियो भावुक हो गया। वह अपने आपको रोक न सका ओर जेपेत्तो के गले लग गया।

फिर पिनोकियो एक अच्छे लड़के की तरह बर्फ गिरना बंद होते ही अपनी किताब लेकर स्कूल के लिए चल दिया। रास्ते में वह सोचता जा रहा था कि वह पढ़-लिखकर एक अच्छा लड़का बनेगा। उसे बहुत जल्दी ही पढ़-लिखकर सब कुछ सीख जाना होगा, ताकि वह बहुत सारा धन कमा सके।

वह सोच रहा था कि मैं सबसे पहले पापा के लिए एक बहुत ही कीमती कोट खरीदूंगा। उसमें हीरे जवाहरात के बटन लगे होंगे। आखिर पापा ने मेरी किताब खरीदने के लिए अपना कोट बेच दिया।

पिनोकियो यही सोचता हुआ जा रहा था, तभी उसके कानों में आवाज सुनाई दी —"पो.पो. पो., डम. डम. डम.।" यह तो ढोल और बांसुरी की आवाज है। पिनोकियो ने सोचा। शायद कहीं खेल हो रहा है।

पिनोकियो का मन चंचल हो उठा। वह खेल देखने के लिए मचल उठा, लेकिन उधर उसके स्कूल का टाईम हो रहा था। यदि वह खेल देखने के लिए रुक गया तो उसे स्कूल के लिए देर हो जाएगी। इसी तरह पिनोकियो कुछ देर तक सोचता रहा कि क्या करे?

स्कूल जाए या खेल देखे।

लेकिन वह अपनी चंचलता पर काबू नहीं पा सका। अंत में उसने सोचा कि आज खेल ही देख लिया जाए। स्कूल कल से चला जाएगा। यह निश्चय करने के बाद पिनोकियो उस ओर ही बढ़ गया, जिधर से आवाज आ रही थी।

वह उस स्थान पर पहुंचा, जहां लोगों की भीड़ लगी थी और एक तम्बू लगा हुआ था। पिनोकियो की समझ में नहीं आया कि यहां क्या हो रहा है, लेकिन लोगों से पूछताछ करने पर उसे पता चला कि वहां कठपुतली का तमाशा हो रहा है और उसे देखने के लिए टिकट खरीदना पड़ता है। टिकट की कीमत है बीस पैसे।

पिनोकियो को बड़ी निराशा हुई।

उसके पास बीस पैसे नहीं थे। बीस क्या, उसके पास एक भी पैसा नहीं था, लेकिन वह तमाशा देखने के लिए मरा जा रहा था। उसने एक लड़के से बीस पैसे उधार मांगे, लेकिन उसने पिनोकियो को पैसे उधार देने से मना कर दिया।

"अच्छा तुम बीस पैसे में मेरा यह कोट खरीद लो।" पिनोकियो ने कहा।

"तुम्हारे कोट का मुझे क्या करना है?" उसने कहा—"यह तो वैसे ही कागज का बना हुआ है।"

"कोट नहीं ले रहे तो मेरी किताब ही ले लो, लेकिन मुझे बीस पैसे दे दो।"

उसने पिनोकियो की किताब लेने में भी दिलचस्पी नहीं दिखाई, बल्कि पिनोकियो को झिड़क भी दिया—"तुम क्या समझते हो कि मेरे पास किताब ही नहीं है, जो मैं तुम्हारी किताब लूंगा।"

पिनोकियो अपना-सा मुंह लेकर रह गया। उसे बहुत दुख हो रहा था कि टिकट खरीदने के लिए उसे कहीं से बीस पैसे नहीं मिल रहे।

पिनोकियो जिस समय उस लड़के को अपनी किताब बेचने की कोशिश कर रहा था, उसी समय रद्दी कागज खरीदने वाले एक कबाड़ी की नजर उस पर पड़ गई।

वह पिनोकियो के पास आया और उसने बीस पैसे के बदले में पिनोकियो की किताब खरीद ली।

पिनोकियो बहुत खुश हुआ। बीस पैसे में उसने टिकट खरीदा और फिर खुश होता हुआ तमाशा देखने के लिए तम्बू में प्रविष्ट हो गया।

तमाशा बड़ा मजेदार था। दर्शक पूरी दिलचस्पी के साथ कठपुतलों का खेल देख रहे थे। उस समय दो कठपुतलों की लड़ाई दिखाई जा रही थी। दर्शक बड़े चाव से कठपुतलों को आपस में झगड़ते हुए देख रहे थे। कठपुतलों में एक का नाम हरले था। पिनोकियो को भी यह खेल बड़ा मजेदार लग रहा था।

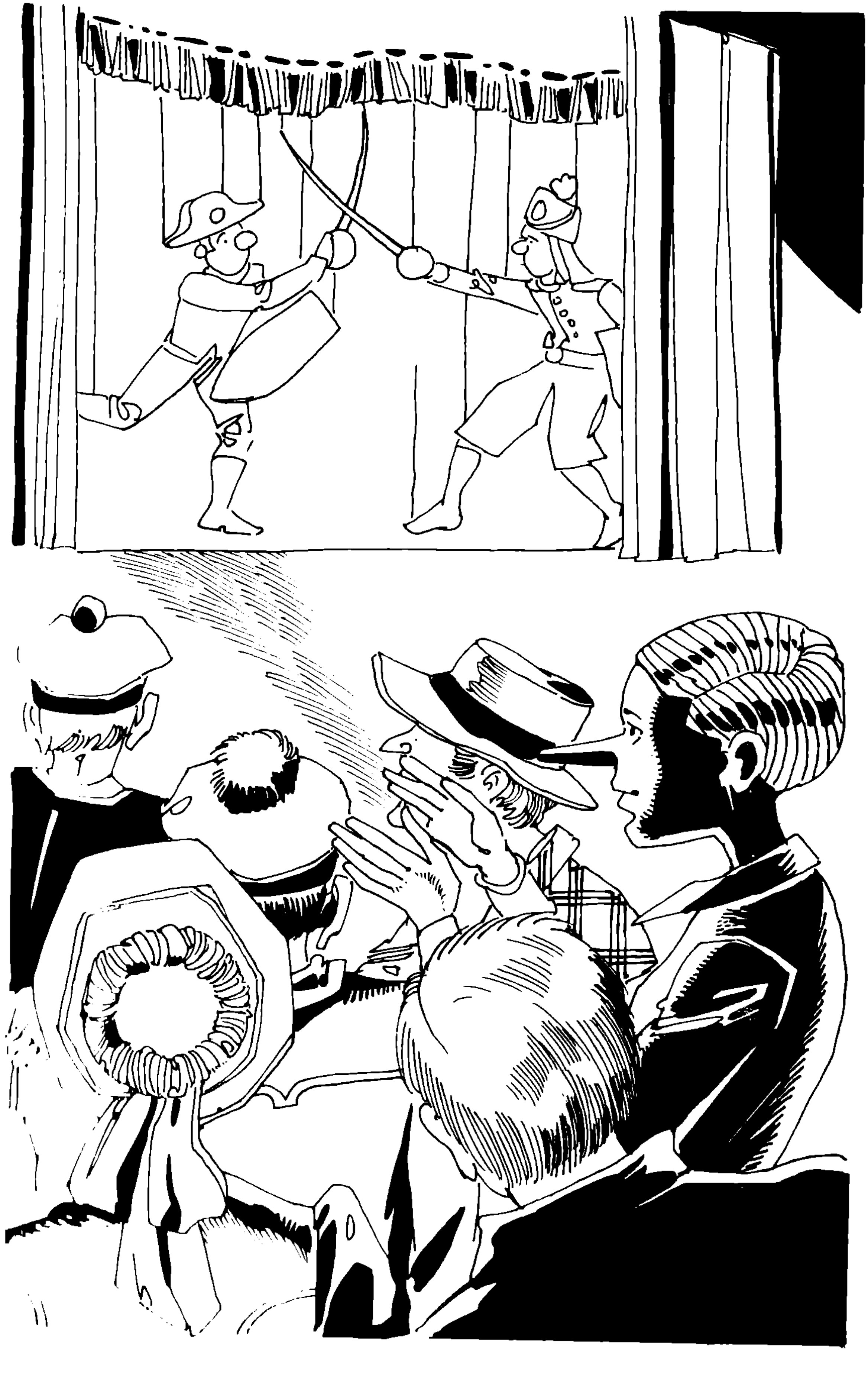
लेकिन तभी उस हरले नाम के कठपुतले की नजर पिनोकियो पर पड़ी। वह अपना खेल रोककर पिनोकियो की ओर देखने लगा। फिर वह जोर से चिल्लाया—"अरे, पिनोकियो आ गया। पिनोकियो आ गया।"

उसी समय एक कठपुतली ने भी पर्दे की ओट से झांककर पिनोकियो को देख लिया। वह उछलकर पर्दे से बाहर निकल आई और हरले के ऊंचे स्वर में अपना स्वर मिलाने लगी।

बस फिर क्या था?

एक के बाद एक सारे कठपुतले और कठपुतलियां स्टेज पर आकर इकट्ठे हो गए और खुशी से नाचते हुए कहने लगे—"पिनोकियो, हमारा भाई आ गया, पिनोकियो, हमारा भाई आ गया। पिनोकियो जिंदाबाद।"

फिर कुछ कठपुतले और कठपुतलियां मंच से नीचे कूदकर दर्शकों में आ गए



और उन्होंने पिनोकियो को अपने कंधों पर उठा लिया और वे खुशी से नाचते हुए उसे स्टेज पर ले गए।

इस तरह खेल में अव्यवस्था फैल गई। खेल में आ गए इस व्यवधान के कारण दर्शक नाराज होकर शोर मचाने लगे। कठपुतली कंपनी के मालिक ने शोर-शराबा सुना तो वह दौड़कर मंच पर आया।

उसने देखा कि नये कठपुतले ने यहां आकर सारी व्यवस्था भंग कर दी। उसे बड़ा गुस्सा आया। कंपनी का मालिक जादूगरों जैसी वेशभूषा में था। वह देखने में बड़ा ही डरावना लगता था। उसने मंच पर आते ही अपने कठपुतले व कठपुतलियों को डांटकर अंदर जाने के लिए कहा।

वे तुरंत डरकर अंदर चले गए। फिर उसने पिनोकियो की ओर देखा और कहा—"तुम यहां क्या करने आए हो? तुमने यहां आकर घपला क्यों किया है?"

"नहीं-नहीं।" पिनोकियो ने सहमते हुए कहा—"मैंने कुछ नहीं किया। मैं तो खेल देखने के लिए आया था।"

"मैं अभी थोड़ी देर में तुम्हारी खबर लूंगा, लेकिन अभी तुम इधर आओ। पहले मेरा खेल चालू होने दो। फिर तुम्हारी खबर लूंगा।" कहते हुए वह पिनोकियो को घसीटता हुआ ले जाने लगा।

"मैंने कुछ नहीं किया, मेरा कोई कसूर नहीं है।" पिनोकियो रोते हुए कह रहा था, लेकिन कंपनी के मालिक ने इसकी जरा भी परवाह नहीं की।

वह पिनोकियो को घसीटता हुआ अंदर ले गया और खेल फिर से चालू हो गया।

शो खत्म होने पर कठपुतली कंपनी का मालिक अंदर पहुंचा। उसकी रसोई में मांस भूना जा रहा था, लेकिन आग बहुत धीमी थी। इसलिए मांस ठीक से नहीं भुन रहा था। उसने जोर से आवाज लगाई—"हरले ! नेल्लो!!"

हरले व नेल्लो नाम के दो कठपुतले दौड़ते हुए वहां पहुंचे।

"वह कठपुतला, जो खेल में गड़बड़ कर रहा था।" मालिक ने कहा—"मैंने उसे रस्सी से बांधकर रखा हुआ है। उसे पकड़कर ले आओ। वह सूखी लकड़ी का बना हुआ है। उसे चूल्हे में झोंक दिया जाएगा तो आग खूब जलेगी।"

यह सुनकर हरले व नेल्लो बहुत घबरा गए। उन्हें दुख भी बहुत हुआ, लेकिन मालिक का आदेश टालना उनके लिए संभव नहीं था। वे पिनोकियो को पकड़कर लाने लगे तो पिनोकियो ने बहुत हाथ-पैर मारे। वह बहुत छटपटाया, लेकिन उन्होंने उसे छोड़ा नहीं।

मालिक की डरावनी सूरत देखकर तो वह डर के मारे बुरी तरह रोने लगा—"पापा... पापा... मैं मरना नहीं चाहता। मैं मरना नहीं चाहता।"

मालिक ने पिनोकियो को इस तरह रोते हुए देखा तो वह छींकने लगा। यह देखकर हरले ने राहत की सांस ली। उसने पिनोकियो को बताया—"तुम्हारी किस्मत अच्छी है। तुम बच गए। मालिक जब किसी पर रहम करता है तो उसे छींक आने लगती है।

यह सुनकर पिनोकियो खुश हो गया, लेकिन उसकी सिसकियां अब भी जारी थीं। उसने पिनोकियो की ओर देखा—"तुम्हारे मां-बाप भी हैं?"

"हां, पापा हैं, लेकिन मां के बारे में मैं नहीं जानता।"

"तब तो तुम्हारे जल जाने पर तुम्हारे पापा को बहुत दुख होता। अच्छा हुआ, तुमने मुझे बता दिया।" कहकर उसने अपने कठपुतलों की ओर देखा—"सिपाहियों, हरले के हाथ-पैर बांधकर उसे चूल्हे में झोंक दो। किसी तरह मांस तो पकाना ही है।"

कठपुतलों ने यह सुना तो हरले को पकड़ लिया गया। हरले बहुत घबराया। तभी पिनोकियो ने उसके पैर पकड़ लिए—"ऐसा न करें हुजूर, उसे छोड़ दें। उस पर दया करें मालिक।"

ऐसे सम्मानजनक शब्द सुनना मालिक को बहुत अच्छा लगा। उसने पिनोकियो की ओर देखा।

"क्या चाहते हो?" मालिक ने पूछा

"हरले को छोड़ दीजिए, सरकार।"

"क्यों, उससे तुम्हें क्या?"

"वह मेरा घनिष्ट मित्र है। उसने मेरी जान बचाई है, लेकिन यह नहीं हो सकता कि मेरी जान बचाने के लिए उसकी जान चली जाए। इससे तो यही अच्छा है कि मुझे ही चूल्हे में झोंक दिया जाए।"

पिनोकियो की इस बात पर वह बहुत खुश हुआ। उसने हरले को छोड़ने का हुक्म दे दिया। फिर कहा—"ठीक है, आज बिना पका मांस ही खाना पड़ेगा, लेकिन कल तुम किसी को नहीं छुड़ाना।"

वास्तव में शक्ल-सूरत से वह जितना डरावना लगता था, उतना डरावना था नहीं। वह बहुत ही कोमल दिल का आदमी था।

अगले दिन उसने पिनोकियो से पूछा—"तुम्हारा पापा कौन है? क्या नाम है उसका?"

"जेपेत्तो।" पिनोकियो ने उत्तर दिया।

"क्या करता है, वह?"

"भीख मांगता है।"

"तब तो वह बहुत पैसे कमाता होगा।"

"कहां पैसे कमाता है, उसके पास तो एक फूटी कौड़ी भी नहीं है। मेरी किताब

खरीदने के लिए उसने अपना कोट बेच दिया।" पिनोकियो रुआंसे स्वर में कहने लगा—"लेकिन मैंने यहां तमाशा देखने के लिए उस किताब को बेचकर टिकट खरीद लिया। अब वह इतनी ठंड में कैसे रहेगा?"

उसे पिनोकियो पर बड़ी दया आई।

"ओह ! बेचारा।" उसने अफसोस जाहिर किया। फिर पिनोकियो को पांच मोहरें देते हुए उसने कहा—"अब तुम अपने घर जाओ और यह मोहरें अपने पापा को दे देना।"

पिनोकियो बहुत खुश हुआ। उसने दयावान मालिक को नमस्कार किया।

जाने से पहले पिनोकियो वहां सभी कठपुतलों से गले मिला और फिर उनसे विदा लेकर अपने घर के लिए रवाना हो गया।

जब वह घर जा रहा था तो उसने रास्ते में एक अंधी बिल्ली व लंगड़ी लोमड़ी को देखा जो इसी की ओर आ रही थीं। वे दोनों एक दूसरे की मदद कर रही थीं। लोमड़ी बिल्ली का सहारा लेकर चल रही थी और बिल्ली को रास्ता बता रही थी।

पिनोकियो के सामने आकर वे रुकीं। फिर लोमड़ी ने बड़े सम्मान का प्रदर्शन करते हुए कहा—"पिनोकियो भैया प्रणाम।"

पिनोकियो ने आश्चर्य से उनकी ओर देखकर पूछा—"तुम मेरा नाम कैसे जानती हो?"

"अरे हम तो तुम्हारे पापा के बारे में भी सब कुछ जानती हैं। बेचारा ठंड से ठिठुरकर मरा जा रहा है।"

"अब पापा को ठंड से नहीं ठिठुरना पड़ेगा और न ही अब वह बेचारा है।"

"क्यों? अब ऐसा क्या हो गया? लोमड़ी ने पूछा।

"अब हम अमीर हो गए हैं।"

"तुम और अमीर?" लोमड़ी ने व्यंग्यात्मक स्वर में कहा। बिल्ली हंसते हुए अपनी मूछों पर हाथ फेरने लगी।

"इसमें हंसने की क्या बात है?" पिनोकियो ने गुस्से में कहा—"मेरे पास पांच मोहरें हैं, सोने की।"

"क्यों झूठ बोल रहे हो पिनोकियो ?"

"यह देखो।" पिनोकियो ने मोहरें निकालकर उन्हें दिखाते हुए कहा—"असली सोने की हैं।"

लोमड़ी ने अपनी मुड़ी हुई टांग से उचककर देखा तथा अंधी बिल्ली ने अपनी आंखें फाड़ते हुए सोने की मोहरों को देखा और फिर पिनोकियो के अपनी ओर देखने से पहले ही अपनी आंखें मूंदकर फिर अंधी बन गई।

"अच्छा पिनोकियो, यह बताओ कि इन मोहरों का तुम क्या करोगे?"

"सबसे पहले तो अपने पापा के लिए एक सुंदर-सा और कीमती कोट बनवाऊंगा। जिसमें हीरे जवाहरात के बटन लगे होंगे। फिर अपने लिए किताब खरीदूंगा। मुझे पढ़कर एक अच्छा आदमी बनना है।"

"रहने दो पिनोकियो, पढ़ाई-लिखाई सब बकवास है। पढ़ाई के चक्कर में तो मैं अपनी टांग तुड़वा बैठी।" लोमड़ी ने कहा।

"और मैं अंधी बनी बैठी हूं।" बिल्ली ने कहा—"इसी पढ़ाई के चक्कर में।"

उसी समय एक पेड़ पर बैठी चिड़िया ने पिनोकियो को सचेत किया—"इनके बहकावे में मत आना पिनोकियो। ये बहुत ही चालाक हैं और...।"

चिड़िया अपनी बात पूरी भी नहीं कर सकी थी कि बिल्ली फुर्ती से पेड़ पर चढ़ी और चिड़िया को मारकर खा गई तथा फिर से अंधी बन गई।

पिनोकियो ने उसकी ओर देखा।

"तुमने उस चिड़िया के साथ ऐसा क्यों किया?"

"उसे एक सबक देना था।"

"सुनो पिनोकियो" लोमड़ी ने कहा—"तुम अपने धन को कई गुना करना चाहते हो? एक मोहर के बदले में सैंकड़ों मोहरें, हजारों या लाखों मोहरें।"

पिनोकियो ने उसकी ओर देखा।

"बोलो?" लोमड़ी ने पूछा।

"पिनोकियो को लालच आ गया—"हां, हां। क्यों नहीं? लेकिन ऐसा कैसे हो सकता है।"

"हो सकता है, लेकिन तुम्हें हमारे साथ चलना पड़ेगा।"

"नहीं, नहीं। मैं तुम्हारे साथ नहीं जा सकता। पहले मुझे अपने घर जाना है।"

"तुम्हारी मर्जी।" लोमड़ी ने कहा—"जाओ अपने घर। हमें क्या पड़ी है। वैसे तुम आई लक्ष्मी को ठुकरा रहे हो।"

"बिल्कुल।" बिल्ली ने उसके स्वर में स्वर मिलाया—"तुम आई लक्ष्मी को ठोकर मार रहे हो।"

"दो दिन में ही इसकी पांच मोहरें दो हजार तो जरूर हो जाती।" लोमड़ी ने बिल्ली की ओर देखते हुए कहा।

"हां, दो हजार तो जरूर हो जाती।"

"लेकिन कैसे हो जाती?" पिनोकियो ने पूछा।

"हम उल्लुओं के देश में जा रही हैं।" लोमड़ी ने कहा—"वहां एक जादू का मैदान है, जहां थोड़ी-सी मिट्टी खोदकर उसमें एक मोहर बो दी जाती है। उस पर थोड़ा-सा पानी और नमक छिड़ककर सो जाओ। अगले दिन सोकर उठने से पहले ही मोहरों का एक पूरा पेड़ उग आता है। उस पर मोहरें ही मोहरें लगी होती हैं। जितनी चाहो तोड़ लो।"

पिनोकियो ने हैरत से उनकी ओर देखा "यदि मैं अपनी पांचों मोहरें बो दूं तो क्या होगा?"

"फिर तो इतनी मोहरें लगेंगी कि पूछो मत। तुम मालदार हो जाओगे।"

"तब तो मैं पांच सौ मोहरें तुम्हें इनाम में दे दूंगा।" पिनोकियो ने कहा।

"हमें इनाम-उनाम कुछ नहीं चाहिए। हम तो बस दूसरों का भला करना चाहती हैं।"

पिनोकियो को वह चालाक लोमड़ी व बिल्ली बहुत भली नजर आईं और वह उनके साथ चलने को राजी हो गया।

चलते-चलते वे थक गए तो एक सराय में ठहर गए। लोमड़ी ने कहा—"हम लोग कुछ खा-पीकर जल्दी सो जाएं, क्योंकि आधी रात के बाद हम फिर अपनी यात्रा आरम्भ कर देंगी। तभी हम सवेरा होने तक जादू के मैदान तक पहुंच सकते हैं।"

इस तरह तीनों खाने पर बैठ गए। बिल्ली व लोमड़ी पेट खराब होने का बहाना भी बना रही थीं और डटकर खा भी रही थीं। दोनों मिलकर ढेर सारा खाना डकार गईं। पिनोकियो के लिए उन्होंने थोड़ा-सा ही खाना छोड़ा जिससे उसका पेट भी ठीक से नहीं भर पाया।

फिर वे सो गए।

पिनोक़ियो सोते समय भी जादू के मैदान के बारे में ही सोच रहा था। जैसे उसका मोहरों का पेड़ उग आया हो। उस पर ढेर सारी मोहरें लगी हों और वह उन्हें तोड़कर इकट्ठा कर रहा हो।

अभी उसका सपना पूरा भी नहीं हो सका था कि किसी ने जोर से दरवाजा भड़भड़ाया। पिनोकियो ने उठकर दरवाजा खोला। उसने देखा कि सराय का मालिक दरवाजे पर खड़ा था—"आधी रात हो गई।" उसने कहा—"आपको जाना था। आपकी वे दोनों मेहमान तो चली गईं। उनके घर से तार आया था कि उनका बच्चा बीमार है। मैंने उनसे खाने का पैसा भी नहीं लिया। लेता भी कैसे, वे आपकी मेहमान थी आखिर।"

बेचारे पिनोकियो को एक मोहर खर्च करनी पड़ी। चार मोहरें लेकर पिनोकियो सराय से बाहर निकला। उस समय गहरा अंधकार छाया हुआ था। हाथ को हाथ दिखाई नहीं पड़ रहा था। पिनोकियो तेजी से उस अंधकार में बढ़ा चला जा रहा था तो उसे किसी ने पुकारा।

पिनोकियो ने पलटकर देखा—"एक पेड़ के करीब एक जुगनू-सा टिमटिमा रहा था। उसी ने पिनोकियो को पुकारा था।

"क्या बात है?" पिनोकियो ने कहा—"तुम मेरा नाम कैसे जानते हो और तुम कौन हो?"

"मैं उस झींगुर का भूत हूं, जिसे तुमने हथोड़ी से मारा था। तुम उस चालाक लोमड़ी और स्यानी बिल्ली की बातों में मत आओ। वह दोनों ठग हैं और तुम्हें लूट लेंगी।"

"मैं तुम्हारी बातों में नहीं आने वाला।" पिनोकियो ने लापरवाही से कहा—"मुझे बहकाने की कोशिश मत करो।"

कहकर पिनोकियो आगे बढ़ गया।

वह कुछ दूर ही चला था कि उसे अपने आस-पास कुछ आहट सुनाई दी। पिनोकियो ने पलटकर देखा तो उसके प्राण सूख गए। काला लबादा पहने दो आदमी उसके सामने आ गए। पिनोकियो डर के मारे कांपने लगा।

"जो भी तुम्हारे पास रुपया है, हमारे हवाले कर दो।" उन्होंने कहा।

पिनोकियो ने मोहरें मुंह में रखी हुई थीं। पल-भर के लिए वह चुपचाप खड़ा रह गया।

"सुना नहीं तुमने। अपना सारा धन हमारे हवाले कर दो। नहीं तो तुम्हें जान से मार देंगे।"

मोहरें मुंह में होने के कारण पिनोकियो बोल नहीं पा रहा था। वह संकेतों से ही कह रहा था कि उसके पास कुछ भी नहीं है। उसे छोड़ दो।

"या तो चुपचाप अपना माल हमारे हवाले कर दो, नहीं तो हम तुम्हें मार डालेंगे।" उनमें से एक ने कहा।

"और हम तुम्हारे पापा को भी मार डालेंगे।" दूसरे डाकू ने कहा।

पिनोकियो बुरी तरह घबरा गया और बोला—"नहीं, नहीं, मेरे पापा को नहीं मारना।" उसने डरते हुए कहा तो उसके मुंह में रखी मोहरें बज उठीं।

"अच्छा ! तो माल मुंह में रखा है। निकालो जल्दी बाहर।"

लेकिन पिनोकियो ने सख्ती से अपना मुंह बंद कर लिया। दोनों डाकू पिनोकियो पर टूट पड़े। उन्होंने उसे जमीन पर गिरा दिया और उसका मुंह खोलने का प्रयास करने लगे। पिनोकियो ने मुंह नहीं खोला तो उन्होंने एक जंग लगी कील निकालकर उसके मुंह में ठूंस दी।

इस तरह भी उसका मुंह नहीं खोल पाए। पिनोकियो ने उसका हाथ काट लिया। इस तरह उसका हाथ काटकर थूका तो वह किसी बदमाश का हाथ नहीं, बल्कि बिल्ली का पंजा था।

इसी बीच पिनोकियो को मौका मिला और वह भाग निकला। दोनों बदमाश उसके पीछे लग गए। पिनोकियो दौड़ते-दौड़ते थक गया। उसे लग रहा था कि डाकू उसका पीछा नहीं छोड़ेंगे। वह एक पेड़ पर चढ़ गया। वह भी उसके पीछे पेड़ पर चढ़े तो पिनोकियो ने उन्हें नीचे धकेल दिया। वे दोनों लुढ़कते हुए जमीन पर गिर पड़े और पिनोकियो एक दूसरे पेड़ पर कूदकर फिर भागने लगा। एक मकान के पास पहुंचकर उसका दरवाजा पीटने लगा।



मकान की एक खिड़की खुली व एक लड़की ने झांककर देखा, लेकिन उसी समय डाकुओं ने फिर से पिनोकियो को दबोच लिया।

वे फिर उसका मुंह खोलने की कोशिश करने लगे, लेकिन पिनोकियो ने मुंह नहीं खोला।

उन्होंने चाकू से पिनोकियो पर वार किया, लेकिन वह तो लकड़ी का बना हुआ था। उस पर भला क्या असर हो सकता था। उनके चाकू ही टूट गए।

"यह ऐसे नहीं मानेगा।" उन्होंने कहा—"इसे फांसी पर लटका दो।"

फिर उन्होंने पिनोकियो के हाथ बांधकर उसके गले में रस्सी बांधी और उसे पेड़ की एक डाल से लटका दिया।

फिर वे उसके मरने का इंतजार करने लगे, लेकिन घंटों इंतजार करने के बाद भी पिनोकियो आंखें झपकाता रहा तो वे बैठे-बैठे ऊब गए।

"अब हमें चलना चाहिए।" उन्होंने आपस में कहा—"सुबह तक तो यह मर जाएगा। फिर इसके मुंह से माल निकाल लेंगे।" इस तरह वे चले गए।

पिनोकियो को बहुत तकलीफ हो रही थी। वह हाथ-पैर मार रहा था।

मकान की खिड़की से जिस सुंदर लड़की ने झांककर देखा था, वास्तव में वह एक परी थी। जंगल के सारे पक्षी उसका आदेश मानते थे। उसने पिनोकियो को इस हालत में देखा तो उसे पिनोकियो पर बहुत दया आई।

उसने संकेत दिया तो तुरंत ही एक बाज ने आकर परी को सलाम किया।

"अपनी चोंच से इसकी रस्सी काटकर...।"

परी ने आदेश दिया—"इसे फांसी से मुक्त कर दो। फिर इसे आराम से घास पर लिटा दो।"

बाज ने फौरन आदेश का पालन किया और फिर पलक झपकते ही अपना काम करके वापस आ गया।

उसके बाद एक कुत्ता हाजिर हुआ तो परी ने उसे आदेश दिया—"गाड़ी निकालो और घास पर जो लड़का लेटा हुआ है, उसे आराम से उठाकर यहां ले आओ।"

कुछ देर बाद कुत्ता पिनोकियो को लेकर आ गया तो परी ने कुत्ते की मदद से उसे एक कमरे में सुंदर-से बिस्तर पर लिटा दिया।

कुछ देर बाद ही जंगल के डाक्टरों की एक टीम पिनोकियो का डाक्टरी परीक्षण करने के लिए वहां पहुंच गई। विशेषज्ञ डॉक्टरों की उस टीम में डॉक्टर कौआ, डॉक्टर उल्लू व डॉक्टर झींगुर थे।

वे पिनोकियो का परीक्षण करने लगे।

"मेरे विचार से...।" डॉक्टर कौआ ने कहा—"यह जिंदा है या फिर मर चुका है। क्यों डॉक्टर उल्लू?"

"मेरे विचार से तो यह मर चुका है, या फिर जिंदा है। तुम्हारा क्या कहना है, डॉक्टर झींगुर?"

"मेरे विचार से तो यह मर भी गया है और जिंदा भी है, लेकिन मैंने इसे पहले भी कहीं देखा है। मुझे याद नहीं आ रहा है कि कहां देखा है? लेकिन यह एक कठपुतला है।"

झींगुर की आवाज सुनकर पिनोकियो एक बार उठकर बैठ गया, लेकिन फौरन ही फिर लेट गया।

"हां याद आया।" झींगुर ने कहा—"यह कठपुतला बहुत ही आवारा और बदमाश है। यह अपने पापा का कहना न मानकर घर से भाग चुका है।"

यह सुनकर पिनोकियो बिस्तर में मुंह छिपाकर सिसकने लगा। फिर फूट-फूटकर रोने लगा तो डॉक्टर लोग चौंके।

"मरा आदमी रोने लगे तो इसका मतलब होता है कि वह जिंदा होने वाला है।" डॉक्टर कौआ ने कहा।

"नहीं, इसका मतलब यह नहीं होता।" डाक्टर उल्लू ने कहा—"जब मरा हुआ आदमी रोने लगे तो इसका मतलब साफ है कि वह मर ही चुका है और उसे अपने मरने का दुख हो रहा है।"

डॉक्टरों की राय जानने के बाद परी ने उन्हें विदा किया और पिनोकियो के पास आकर देखा तो वह बुखार से तप रहा था।

फिर वह एक गिलास में दवा बनाकर लाई और पिनोकियो की ओर देखते हुए कहा—"यह दवा पी लो। इसे पीकर तुम्हारी तबीयत बिल्कुल ठीक हो जाएगी।"

कहकर जंगल की परी ने दवा का गिलास उसकी ओर बढ़ा दिया।

पिनोकियो ने दवा का गिलास मुंह से लगाकर देखा। वह बहुत कड़वी लगी तो उसने बुरा-सा मुंह बनाया और दवाई पीने में आनाकानी करने लगा। परी ने उसे मिश्री का टुकड़ा दिया ताकि दवाई इसके साथ पी सके। वह मिश्री का टुकड़ा तो खा गया, किंतु दवाई तब भी नहीं पी। वह लगातार बहानेबाजी करता रहा तो परी ने एक दूसरा तरीका प्रयोग किया।

उसने संकेत दिया तो उसी समय चार मोटे तगड़े खरगोश एक ताबूत लेकर आ गए। वे पिनोकियो की ओर बढ़े।

"यह तुम क्या करने जा रहे हो?" पिनोकियो ने पूछा।

"थोड़ी देर में तुम मरने वाले हो। इसलिए हम तुम्हें कब्रिस्तान ले जा रहे हैं।"

"लेकिन मैं तो जिंदा हूं।" पिनोकियो ने रुआंसे स्वर में कहा।

"इससे क्या होता है। तुमने दवाई तो पी नहीं, इसलिए अब मरने ही वाले हो।"

पिनोकियो ने तुरंत परी के हाथ से गिलास लेकर दवाई पी ली। इसके बाद चारों खरगोश चले गए। परी मुस्कराने लगी।

दवाई के प्रभाव से जल्दी ही पिनोकियो की तबीयत ठीक हो गई।

फिर वह बिस्तर पर उठ बैठा और उसके बाद तो कमरे में टहलने भी लगा। परी यह देखकर बहुत खुश हुई। वह पिनोकियो से बात करने लगी। परी ने उससे पूछा कि वह इस मुसीबत में कैसे आ फंसा, तो पिनोकियो ने अपनी पूरी कहानी उसे बता दी।

पूरी कहानी सुनने के बाद परी ने उससे पूछा—"अब वह मोहरें कहां हैं?"

"मैंने गड्ढ़ा खोदकर उन्हें जमीन में दबा दिया था।" पिनोकियो ने परी से झूठ बोला।

झूठ बोलने के कारण उसकी नाक दो इंच लंबी हो गई।

"तुमने उन्हें कहां दबाया है।" परी ने पूछा—"मैं अभी नौकरों को बुलाकर उन्हें यहीं मंगवाती हूं।"

"ओह, मैं भूल गया था।" पिनोकियो ने कहा—"याद आया। मैंने उन्हें मुंह में रखा था, लेकिन अब दवाई पीते समय वे मेरे पेट में चली गईं।"

उसने फिर झूठ बोला तो उसकी नाक बढ़कर और भी लंबी हो गई।

उसकी नाक को देखकर परी को हंसी आ गई। उसने हंसते हुए कहा—"देखो, तुम झूठ बोल रहे हो। झूठ बोलने के कारण ही तुम्हारी नाक बढ़कर इतनी लम्बी हो गई।

पिनोकियो सकपका गया। अपना झूठ पकड़े जाने पर उसे शर्म भी बहुत आई। अब तक उसकी नाक बढ़कर कमरे के दरवाजे तक पहुंच गई। वह रोने लगा।

परी को उस पर हंसी भी आई और दया भी।

"अच्छा तुम रोओ नहीं।" उसने कहा—"मैं अभी तुम्हारी यह तकलीफ दूर करती हूं।"

फिर परी ने आदेश देकर कई कठफोवड़े वहां बुलाए। उन्होंने पिनोकियो की नाक को काट-काटकर छोटा कर दिया। पिनोकियो बहुत खुश हुआ। उसने परी को धन्यवाद दिया और कहा—"तुम बहुत अच्छी हो। तुमसे अच्छी परी और कोई नहीं है।"

परी भी अपनी प्रशंसा सुनकर खुश हो गई और उसने पिनोकियो को अपना भाई बना लिया। फिर परी ने कहा—"तुम अब हमेशा यहीं मेरे साथ रहोगे। रहोगे ना?"

"मुझे यहां रहने में कोई एतराज नहीं, लेकिन मेरे पापा का क्या होगा? वे मेरी प्रतीक्षा कर रहे होंगे।"

"तुम अपने पापा की चिंता मत करो। मैंने उन्हें सूचना भिजवा दी है। वे भी शाम तक यहीं आ जाएंगे।"

"तब तो ठीक है, लेकिन मैं रास्ते में ही अपने पापा का स्वागत करना चाहता हूं।"

“ठीक है। तुम ऐसा चाहते हो तो तो चले जाओ, लेकिन रास्ता जंगल से होकर जाता है। चौकस होकर जाना।”

पिनोकियो चल दिया।

वह उसी पेड़ के पास पहुंचा, जहां उसे फांसी पर लटकाया गया था। उसी समय एक झाड़ी से निकलकर वही बिल्ली और लोमड़ी उसके सामने आ गईं—“अरे पिनोकियो भैया! तुम यहां?” लोमड़ी ने कहा।

बिल्ली ने भी उसी के शब्दों को दोहराया।

उत्तर में पिनोकियो ने अपने साथ हुई उस घटना के बारे में उन्हें बता दिया कि किस प्रकार उसे डाकू मिल गए थे और फिर उस पर क्या-क्या गुजरी?”

बिल्ली और लोमड़ी ने बड़ा दुख प्रकट करते हुए कहा—“डाकू तो बहुत बदमाश थे, जो तुम्हारे साथ ऐसा सलूक किया।”

फिर लोमड़ी ने पूछा—“पिनोकियो भैया, तुम्हारी उन मोहरों का क्या हुआ?”

“वह तो अब भी मेरे पास हैं।” पिनोकियो ने कहा। फिर उसकी नजर बिल्ली के कटे हुए पंजे पर गई—“अरे तुम्हारे पंजे को क्या हुआ?”

बिल्ली सकपकाई। उससे कोई जवाब देते नहीं बना, लेकिन लोमड़ी ने बात को संभाल लिया।

“हम कहीं जा रही थीं पिनोकियो, रास्ते में एक भेड़िया बैठा भीख मांग रहा था। वह बहुत भूखा था। हमारे पास उसे देने के लिए कुछ भी नहीं था तो बिल्ली ने उसे अपना पंजा काटकर दे दिया। तभी से यह लंगड़ी हो गई।”

“वाह। तुमने तो बहुत बड़ा परोपकार का काम किया है। सभी बिल्लियां ऐसी हो जाएं तो चूहों की किस्मत ही संवर जाएगी।”

“पिनोकियो, तुमने अपनी मोहरों को जादू के मैदान में बोने के बारे में क्या सोचा? लोमड़ी ने प्रश्न किया।

“हां। क्या सोचा तुमने?” बिल्ली ने भी उसी प्रश्न को दोहराया।

“मोहरें बोना चाहो तो चलो हमारे साथ।” लोमड़ी ने कहा।

“हां। चलो हमारे साथ।” बिल्ली ने भी दोहराया।

“मैं जरूर चलता, लेकिन आज नहीं चल सकता। फिर किसी दिन चलूंगा। आज तो मैं अपने पापा का स्वागत करने जा रहा हूं।”

“लेकिन फिर तो कोई फायदा ही नहीं, क्योंकि एक आदमी ने वह मैदान खरीद लिया है। इसके बाद तो वहां किसी को घुसने नहीं दिया जाएगा।”

“किसी को घुसने नहीं दिया जाएगा।” बिल्ली ने दोहराया।

“थोड़ी ही देर की बात है। तुम हमारे साथ चलो तो कुछ ही देर में तुम्हारी मोहरें बढ़कर हजारों हो जाएंगी।” लोमड़ी ने कहा।

“हां, हजारों हो जाएंगी।” बिल्ली ने दोहराया।

पिनोकियो फिर लालच में आ गया और वह उनके साथ चलने के लिए तैयार हो गया। चलते-चलते वे एक शहर में पहुंचें। उस शहर का नाम बौडम नगर था और उसमें रहने वाले सारे पशु-पक्षी नम्बर एक के चोर, उच्चके, उठाईगिरे, ठग व बदमाश थे। फिर वे नगर को पार करते हुए एक मैदान में पहुंचे।

"यही जादू का मैदान है।" लोमड़ी ने बताया—"तुम यहीं पर अपनी मोहरों को बो दो।"

पिनोकियो ने गड्ढा खोदकर मोहरों को मिट्टी में दबाया और फिर पानी लाकर उन्हें सींच दिया।

"अब हमें यहां से चलना चाहिए।" बिल्ली व लोमड़ी ने कहा—"शाम तक मोहरों के पौधे उग आएंगे। उन पर हजारों मोहरें लगी होंगी। तुम आकर तोड़ लेना।"

पिनोकियो यह सुनकर बहुत खुश हुआ। उसने बिल्ली व लोमड़ी को पांच सौ मोहरें देने का वायदा किया तो उन्होंने कहा—"हमें इनाम की कोई जरूरत नहीं है। हम तो बस दूसरों की भलाई करती हैं।"

इसके बाद बिल्ली व लोमड़ी पिनोकियो से विदा लेकर चली गईं।

बिल्ली व लोमड़ी को विदा करने के बाद पिनोकियो शहर में आ गया। यहां आकर वह शाम होने का इंतजार करने लगा, क्योंकि शाम तक मोहरों के पेड़ उग आएंगे और उन पर मोहरें लगी होंगी, मोहरें ही मोहरें।

वह बहुत खुश हो रहा था। उसकी कल्पनाओं में बस मोहरों से लदे पेड़ ही थे। उनके अलावा वह और कुछ सोच ही नहीं रहा था। इसी तरह शाम नजदीक आ गई।

पिनोकियो वापस मैदान में पहुंचा, फिर वह उस गड्ढे के पास पहुंचा, जहां उसने अपनी मोहरें बोई थीं, लेकिन यह देखकर उसे बड़ा आश्चर्य हुआ कि वहां कोई पेड़-वेड़ नहीं उगा। वह समझ नहीं पा रहा था कि पेड़ आखिर उगे क्यों नहीं, जबकि उसने तो ठीक से बोया था। फिर उन्हें पानी से सींचा भी था। फिर क्या कारण था कि पेड़ नहीं उगे।

तभी उसे जोर से हंसने की आवाज सुनाई दी। उसने अपना सिर उठाकर ऊपर देखा, क्योंकि हंसने की यह आवाज उसके सिर के ऊपर से ही आई थी। पिनोकियो ने पेड़ की डाली पर एक तोते को बैठे देखा। इतनी जोर-जोर से वही हंस रहा था। पिनोकियो को बड़ा गुस्सा आया।

"इतनी जोर से क्यों हंस रहे हो?"

"जो लोग बिना सोचे समझे दूसरों की बातों में आ जाते हैं, वे मूर्ख होते हैं और मूर्खों पर हंसी ही आती है।" तोते ने कहा।

"कहीं ऐसा तुम मेरे बारे में तो नहीं कह रहे?" पिनोकियो ने पूछा।

"हां। मैं तुम्हारे बारे में ही कह रहा हूं और तुम्हारी मूर्खता पर ही हंस रहा हूं। मोहरें भी कोई गेहूं या मटर के बीज थे, जो उग आते।"

"तुम साफ-साफ क्यों नहीं कहते कि बात क्या है?" पिनोकियो ने कहा।

"जब तुम शहर को चले गए थे तो वह लोमड़ी और बिल्ली दोनों आईं और तुम्हारी मोहरें खोदकर निकाली और चंपत हो गईं। अब मैं उसे दुनिया का सबसे चालाक आदमी समझूं, जो उन्हें खोज निकाले।"

पिनोकियो हक्का-बक्का रह गया।

फिर वह दौड़ा-दौड़ा बौडम नगर पहुंचा। वह बौडम नगर की अदालत में अपने साथ हुई घटना की शिकायत करना चाहता था? न्यायधीश के आसन पर उस समय एक भारी डील-डौल का बंदर बैठा था, जिसकी दाढ़ी बहुत लंबी थी।

पिनोकियो ने जज साहब के सामने अपने साथ हुई घटना का बयान दिया। उसने अपराधियों के नाम भी बताए। जज साहब उसका बयान बड़ी गंभीरता से सुनते रहे। उसका बयान समाप्त हुआ तो जज साहब ने घंटी बजाकर चपरासी को तलब किया। फिर उसे आदेश दिया कि सिपाहियों को हाजिर किया जाए।

जज का आदेश मिलते ही दो भयानक कुत्ते हाजिर हुए। आते ही उन्होंने जज साहब को सलाम किया।

"इस मूर्ख की मोहरें चोरी हो गई हैं।" जज साहब ने पिनोकियो की ओर संकेत करते हुए कहा—"इसे फौरन गिरफ्तार करके जेल में डाल दिया जाए।"

इस फैसले पर पिनोकियो हक्का-बक्का रह गया। उसने विरोध में कुछ कहना चाहा, लेकिन सिपाही कुत्तों ने उसका मुंह ही नहीं खुलने दिया और उसे खींचकर अदालत से बाहर ले गए।

पिनोकियो को जेल में डाल दिया गया। उसे एक महीने की सजा दी गई थी। लेकिन उसका भाग्य अच्छा था कि एक घटना घट गई। हुआ यह था कि बौडम नगर का राजा कोई युद्ध जीतकर आया था। विजय की खुशी में उसने तमाम कैदियों को आजाद करने का आदेश दिया।

इस प्रकार पिनोकियो को कैद से मुक्ति मिल गई।

वह बहुत खुश हुआ।

जेल से आजाद होते ही वह अपनी बहन परी के महल की ओर रवाना हो गया। अब उसे समझ में आ गया कि वह कितनी गलतियां करता रहा था। उसे उसी की सजा मिली थी। यह सजा तो उसे मिलनी ही चाहिए थी।

वह अपने मन ही मन कहता जा रहा था—'मेरे पापा कितने अच्छे हैं। परी भी कितनी अच्छी है। वह मेरी छोटी बहन है। मैंने उसका भी कहा नहीं माना। मैं सबसे बुरा लड़का हूं, लेकिन अब मैं कभी ऐसा काम नहीं करूंगा। हमेशा पापा की बात मानूंगा। छोटी बहन का भी कहा मानूंगा और हमेशा उसके साथ अच्छा बर्ताव किया

करूंगा। उसने मेरी कितनी मदद की है। आखिर मेरी जान भी तो उसी ने बचाई है।'

वह यही सोचता हुआ जा रहा था।

उस रास्ते पर कीचड़ बहुत था जिसके कारण चलना मुश्किल हो रहा था। फिर भी किसी तरह पिनोकियो आगे बढ़ता चला जा रहा था।

चलते-चलते वह एक जगह चौंककर रुका। फिर डर के मारे कई कदम पीछे हट गया। हुआ यह कि उसे एक बहुत बड़ा सांप नजर आया, जो रास्ते में ही पड़ा था। उसकी आंखें सुर्ख हो रही थीं। उसके मुंह पर कांटे थे तथा उससे धुंआ उठ रहा था।

पिनोकियो एक पत्थर पर बैठ गया तथा सांप के वहां से जाने का इंतजार करने लगा, लेकिन सांप वहीं पड़ा रहा। कुछ देर बाद पिनोकियो का साहस कुछ बढ़ा। उसने सांप की ओर देखते हुए कहा—"सर्प देवता मुझे थोड़ा-सा रास्ता दे दो। मुझे अपनी बहन के पास पहुंचने की जल्दी है। वह जंगल की रानी है।"

सांप ने उसकी बात पर कोई ध्यान नहीं दिया, लेकिन कुछ देर बाद उसने आंखें मूंद लीं। पिनोकियो ने समझा कि सांप शायद मर गया है। इसलिए वह फिर से उठकर चल दिया।

जैसे ही वह सांप के निकट पहुंचा, वह फुंफकार कर उठ गया। पिनोकियो बुरी तरह से डर गया। घबराहट में वह गिर पड़ा। गिरा भी वह इस तरह कि उसका सिर कीचड़ में धंस गया और पैर ऊपर उठ गए। वह पैर इधर-उधर फेंकने लगा।

उसकी यह दशा देखकर सांप को हंसी आ गई। वह जोर से हंसा और फिर हंसता ही चला गया। ज्यादा हंसने से उसके सिर की नस फट गई और वह सचमुच ही मर गया।

पिनोकियो ने किसी तरह अपने आपको कीचड़ से निकाला। सांप के मर जाने से वह बहुत खुश हुआ। फिर उसके ऊपर से कूदता हुआ आगे बढ़ गया।

अब वह बहुत तेजी से आगे बढ़ रहा था। उसे अपनी बहन से मिलने की बहुत जल्दी और बेचैनी थी, लेकिन इतनी दूर चलने के कारण उसे भूख लग गई थी। तभी उसे अंगूरों का बाग नजर आया। उसमें अंगूरों के बड़े-बड़े गुच्छे लटक रहे थे। वह अंगूर खाने के लिए उस बाग की ओर बढ़ा।

तभी खटाक से उसका पैर खटके में फंस गया। वह मुंह के बल इतनी जोर से गिरा कि उसकी आंखों के सामने लाल-पीले सितारे नाच गए। उसके पैरों में बहुत दर्द हो रहा था। यह खटका एक किसान ने बिल्ली को पकड़ने के लिए लगाया था, जो रात में उसकी मुर्गियों को पकड़कर ले जाती थी।

पिनोकियो जोर-जोर से रोने लगा, लेकिन वहां उसका रोना सुनने वाला कौन

था? वह सुनसान इलाका था और उधर से उस समय तो कोई नहीं गुजरता था, जो पिनोकियो की मदद करता।

इस तरह रात हो गई।

उसी समय एक जुगनू वहां आया तो पिनोकियो ने रो-रोकर उससे प्रार्थना की कि वह उसे छुड़ा दे।

जुगनू ने उसे इस बात के लिए बहुत जलील किया कि वह चोरी की नीयत से आया था।

"हां, मैं मानता हूं, जुगनू भाई।" पिनोकियो ने कहा—"मैं गलत काम कर रहा था, लेकिन फिर कभी मैं चोरी नहीं करूंगा। इस समय मुझे इस मुसीबत से निकाल लो।"

तभी वह किसान वहां पहुंच गया। उसने खटके में लड़के को फंसा देखा तो उसे बड़ी हैरत हुई। उसने कहा—"चोर कहीं के, आज आया है पकड़ में बच्चू। यह तू ही है, जो मेरी मुर्गियां चुराकर ले जाता है और मैं समझता था कि मेरी मुर्गियां बिल्ली पकड़कर ले जाती है।"

पिनोकियो बहुत रोया, गिड़गिड़ाया कि वह चोर नहीं है। वह उसकी मुर्गियां नहीं चुराता, लेकिन किसान ने उसकी एक नहीं सुनी और उसे पकड़कर घर ले गया।

फिर उसने कहा—"तेरा फैसला सुबह किया जाएगा। आज मेरा कुत्ता यहां नहीं है, इसलिए रात में तू कुत्ते की जगह रखवाली करेगा।" कहकर पिनोकियो के गले में उसने एक मजबूत पट्टा बांध दिया।

फिर उसने कहा—"रात में बरसात या तूफान आए तो इस दड़बे में घुस जाना और बिल्ली मेरी मुर्गियों को चुराने आए तो भौंककर मुझे जगा देना।" कहकर उसने पट्टे को जंजीर से बांध दिया।

बेचारा पिनोकियो रात-भर ठंड में भूखा प्यासा पड़ा रहा और किसान आराम से दरवाजा बंद करके सो गया। वह बार-बार पट्टे को खोलने की कोशिश करता, लेकिन बेकार। अंत में हारकर वह दड़बे में घुसकर सो गया। इस तरह वह कुछ घंटों तक सोता रहा।

आधी रात का समय हुआ होगा कि कुछ आहट पाकर पिनोकियो की नींद खुल गई। उसने दड़बे में से गरदन निकालकर देखा तो आंगन में कुछ बिल्लियां खड़ी आपस में बात कर रही थीं। फिर एक बिल्ली उसके पास आकर बोली—"मेलाम्पो भैया, नमस्ते।"

"यह मेरा नाम नहीं है।" पिनोकियो ने उत्तर में कहा।

"अरे, तुम कौन हो?"

"मेरा नाम पिनोकियो है।"

"लेकिन तुम यहां क्या कर रहे हो?"

"मैं यहां कुत्ते की जगह ड्यूटी पर हूं।"



"लेकिन मेलाम्पो, जो इसी दड़बे में रहता था, कहां गया।"

"मर गया।" पिनोकियो ने यूं ही कह दिया।

"मर गया। बड़े दुख की बात है। बहुत अच्छा था, बेचारा। वैसे तुम भी बुरे कुत्ते नहीं लगते।"

"अरे, मैं कुत्ता नहीं हूं।" पिनोकियो ने कहा।

"कुत्ते नहीं हो तो फिर कौन हो तुम?" बिल्ली ने पूछा।

"तुम देखती नहीं, मैं कठपुतला हूं।"

"खैर, कोई बात नहीं। मेलाम्पो के साथ हमारा जो समझौता था, तुम्हारे साथ भी कायम रहेगा। हम ईमानदारी से समझौते का पालन करती हैं।"

"क्या समझौता था मेलाम्पो के साथ तुम्हारा?" पिनोकियो ने पूछा।

"हफ्ते में एक रात को हमें आठ मुर्गियां पकड़ने दोगे। इस बीच तुम चुपचाप दड़बे में पड़े रहोगे। शोर नहीं करोगे और मालिक को नहीं जगाओगे। बदले में हम तुम्हें एक मुर्गी दे देंगे।"

"क्या मेलाम्पो भी यही करता था?"

"और क्या, उसके साथ तो हमारी खूब पटती थी। हम एक बहुत बढ़िया मुर्गी मारकर उसके दड़बे में रख देती थीं। बोलो, हमारा समझौता पक्का रहा?"

"ठीक है। पिनोकियो ने मुस्कराते हुए कहा—"मुझे यह समझौता स्वीकार है।"

बिल्लियां खुश हो गईं और बाड़े की ओर चली गईं जहां मुर्गियां रखी थीं, लेकिन उनके बाड़े में घुसते ही पिनोकियो ने खटाक से दरवाजा बंद कर दिया। फिर वह कुत्ते की तरह भौंकने लगा। किसान तुरंत अपनी बंदूक लेकर बाहर आया।

"क्या बात है?" किसान ने पूछा।

"चार डाकू बिल्लियां मुर्गी पकड़ने बाड़े में गई हैं। मैंने दरवाजा बंद कर दिया है।"

"बहुत बढ़िया। मैं अभी उन्हें मजा चखाता हूं। कहकर वह बाड़े में घुसा और चारों बिल्लियों को पकड़कर बोरे में बंद कर दिया।

उसने पिनोकियो को शाबासी दी और पूरी घटना के विषय में पूछा। पिनोकियो ने उसे पूरी बात बता दी कि किस प्रकार उसके कुत्ते ने डाकू बिल्लियों से समझौता किया हुआ था और वह किस प्रकार उनकी मदद किया करता था।

किसान को अपने स्वामी-भक्त कुत्ते के विषय में पिनोकियो का इस तरह कहना अच्छा नहीं लगा। उसे अपने कुत्ते की स्वामी-भक्ति पर अटूट विश्वास था। उसका मानना था कि उसका स्वामी-भक्त कुत्ता उसके साथ ऐसी धोखेबाजी नहीं कर सकता था कि बिल्लियां उसकी मुर्गियां चुराती रहें और वह लालच में आकर सब कुछ अपनी आंखों से देखता रहे।

लेकिन पिनोकियो के कारण वह बिल्लियां किसान की पकड़ में आ गई थीं। इसलिए वह बहुत खुश था। उसने पिनोकियो की ओर देखा।

"जाओ, मैंने तुम्हें माफ किया।" इतना कहकर उसने पिनोकियो को आजाद कर दिया। उसके गले से पट्टा व जंजीर निकाल ली।

पिनोकियो दौड़ता हुआ किसान के घर से निकला और बाहर सड़क पर आ गया। फिर सीधा जंगल की ओर रवाना हो गया, जहां परी का महल था।

वह उस पेड़ के नीचे पहुंचा, जहां उसे बदमाशों द्वारा फांसी पर लटकाया गया था तो एक बार वह सहमकर रह गया। उस पेड़ के पास उसे अब भी डर लग रहा था कि कहीं किसी झाड़ी में कोई डाकू छिपा हुआ न हो, जो फिर से उस पर हमला कर दे। वह डरता-डरता आगे बढ़ गया।

फिर उसने अपनी नजरें उठाकर इधर-उधर देखा, लेकिन परी का महल भी उसे कहीं नजर नहीं आया। न जाने वह कहां गायब हो गया था। पिनोकियो का दिल घबराने लगा। उसकी कुछ समझ में नहीं आ रहा था, आखिर वह महल कैसे गायब हो सकता था?

वह उस स्थान पर पहुंचा, जहां महल बना हुआ था। महल वहां था ही नहीं। उसके स्थान पर एक चबूतरा बना हुआ था। चबूतरे के सिरहाने संगमरमर का एक पत्थर लगा था। पत्थर पर लिखा था—"यहां नीली आंखों वाली वह सुंदर लड़की चिर निद्रा में सो रही है, जिसका भाई पिनोकियो न जानें कहां चला गया और वह उसी के दुख में रो-रोकर मर गई।"

पिनोकियो यह देखते ही गश खाकर गिर पड़ा। फिर वह दहाड़े मार-मारकर रोने लगा। वह रोता रहा, रोता ही रहा। उस पत्थर से लिपट-लिपटकर वह पूरी रात रोता रहा।

सवेरा हो गया, लेकिन पिनोकियो का रोना बंद नहीं हो रहा था। बार-बार उसे अपनी बहन की याद आ रही थी। कितनी अच्छी थी वह। कितना चाहती थी उसे। उसके पापा जेपेत्तो का भी अब पता नहीं कि वे कहां होंगे। इस दुनिया में अब उसका कोई नहीं था। वह बिल्कुल अकेला रह गया था। यही सोचते-सोचते बार-बार उसकी रुलाई फूट पड़ती थी।

वह इतना रोया कि उसकी आंखों के सारे आंसू सूख गए। फिर भी वह रोता ही जा रहा था। तभी एक विशाल कबूतर आकाश में उड़ता हुआ आया और पिनोकियो के ऊपर आकर रुक गया।

"लड़के, तुम यहां क्या कर रहे हो?" कबूतर ने प्रश्न किया तो पिनोकियो ने अपनी आंखें पोंछते हुए उसकी ओर देखा।

"तुम्हें दिखाई नहीं देता क्या, रो रहा हूं, और क्या कर रहा हूं?"

"अच्छा, यह बताओ, तुम जेपेत्तो को जानते हो?" कबूतर उसके पास आकर बैठ गया।

"यह भी कोई पूछने वाली बात है? वे तो मेरे पापा हैं। उन्हें क्यों नहीं जानूंगा? लेकिन तुम...तुम यह सब कैसे जानते हो? कहीं मेरे पापा ने ही तो तुम्हें नहीं भेजा? वे कहां हैं, तुम जानते हो?"

"जानता तो हूं।"

"कहां है वे?"

"तीन दिन पहले मैंने उन्हें समुद्र के किनारे देखा था।"

"समुद्र के किनारे? वे समुद्र के किनारे क्या कर रहे थे?"

"वहां वे एक छोटी नाव बना रहे थे। तीन महीने तक लगातार तुम्हें ढूंढते रहने पर भी जब तुम्हारा कहीं पता नहीं चला तो वे तुम्हें दूसरे देशों में जाकर ढूंढना चाहते हैं। इसीलिए वे एक छोटी नाव बना रहे थे ताकि समुद्र पार करके दूसरे देशों में जा सकें और तुम्हें ढूंढ सकें।" कबूतर ने बताया।

"समुद का किनारा यहां से कितनी दूर है?" पिनोकियो ने उत्सुकता से पूछा।

"लगभग छः सौ मील, लेकिन तुम वहां जाना चाहो तो मैं तुम्हें वहां पहुंचा सकता हूं।"

"मैं वहां जाना चाहता हूं। तुम मुझे वहां पहुंचा दो तो बड़ी कृपा करोगे मुझ पर।"

"ठीक है, तुम मेरे पंखों पर बैठ जाओ। मैं तुम्हें समुद्र के किनारे वहां पहुंचा दूंगा, जहां मैंने जेपेत्तो को देखा है।"

पिनोकियो तुरंत कबूतर के पंखों पर सवार हो गया।

कबूतर पिनोकियो को लेकर दूर आकाश में उड़ चला। कबूतर उड़ता गया। उड़ते-उड़ते शाम हो गई तो कबूतर को प्यास लगने लगी। पिनोकियो को भी भूख लगी थी। वे एक स्थान पर उतरे, जहां कबूतरों के लिए पानी व दाना रखा हुआ था। कबूतर ने पानी पिया और पिनोकियो कबूतरों का दाना ही खाने लगा। पिनोकियो उस समय इतना भूखा था कि कबूतरों का दाना ही उसे बहुत जायकेदार लग रहा था।

इसके बाद वे फिर उड़ गए।

अगले दिन सुबह होते-होते वे समुद्र के किनारे तक पहुंच गए। कबूतर ने उसे किनारे पर उतार दिया। पिनोकियो उस ओर बढ़ गया, जहां लोगों की बहुत भीड़ इकट्ठा थी। लोग समुद्र की ओर संकेत करते हुए कुछ बातें कर रहे थे।

पिनोकियो ने एक बूढ़ी औरत से पूछा—"वहां क्या हो रहा है?"

"एक आदमी छोटी नौका लेकर समुद्र में उतरा है।" बूढ़ी औरत ने बताया—"मौसम खराब होने के कारण उसकी नौका खतरे में पड़ गई है।"

पिनोकियो ने सुना तो वह चिंतित हो उठा—"वह नौका किधर गई है?"

बूढ़ी औरत ने समुद्र में जिस ओर संकेत किया, वहां पिनोकियो को एक छोटी नौका नजर आई। वह कभी नजर आ जाती थी और कभी समुद्र में उठने वाली लहरों

में खो जाती थी। उस नौका पर जो आदमी सवार था, उसे पिनोकियो ने तुरंत पहचान लिया। वह जेपेत्तो ही था।

"पापा ! पापा !! पापा !!!" पिनोकियो चीख-चीखकर पुकारने लगा, लेकिन उसकी आवाज जेपेत्तो तक नहीं पहुंच पा रही थी। वह दौड़कर एक चट्टान पर चढ़ गया।

फिर वह अपनी टोपी हिला-हिलाकर उसे पुकारने लगा, ताकि वह पिनोकियो को देख सके। अंत में जेपेत्तो ने पिनोकियो को देख ही लिया। वह अपनी नौका को किनारे की ओर मोड़ने की कोशिश करने लगा, लेकिन समुद्र में बहुत ऊंची-ऊंची और खतरनाक लहरें उठ रही थीं।

अचानक ही एक साथ बहुत सारी लहरें उठीं और उन्होंने जेपेत्तो की नाव को चारों ओर से घेर लिया।

जेपेत्तो ने बहुत कोशिश की, लेकिन वह अपनी नौका को बचा नहीं सका और नौका समुद्र में डूब गई।

लोग उसकी आत्मा की शांति के लिए भगवान से प्रार्थना करने लगे, लेकिन पिनोकियो इस तरह अपने पापा को डूबकर नहीं मरने देना चाहता था।

"मैं अपने पापा को बचाऊंगा।" यह कहते हुए वह समुद्र में कूद गया। लोगों की भीड़ यह सब देखती ही रह गई।

पिनोकियो क्योंकि लकड़ी का बना हुआ था, इसलिए वह डूब नहीं सकता था। वह तैरता चला गया। समुद्र में उठती लहरों के कारण कभी वह लोगों को नजर आ जाता था और कभी छिप जाता था। फिर देखते-देखते वह लोगों की नजरों से ओझल हो गया।

लोगों ने अब उसके भी जीवित लौटने की आशा छोड़ दी थी। वे उसकी भी आत्मा की शांति के लिए प्रार्थना करके वापस लौटने लगे।

पिनोकियो तैरता चला गया।

उसे आशा थी कि इस तरह वह अपने पापा को बचा लेगा और इसी आशा के साथ वह समुद्र में अपने पापा की खोज में रात-भर तैरता रहा।

वह रात बड़ी भयानक थी।

सागर में भयंकर तूफानी लहरें उठ रही थीं और ऊपर से मूसलाधार बरसात के साथ ओले गिर रहे थे। फिर भी पिनोकियो तैर रहा था।

तैरते तैरते वह बुरी तरह थक चुका था।

फिर एक ऊंची लहर ने पिनोकियो को जोर से उछाल दिया और वह एक रेतीले मैदान पर जा गिरा।

उस समय दिन निकल आया था। तूफान भी थम चुका था। आसमान साफ था और समुद्र भी शांत था।

पिनोकियो ने धूप में अपने कपड़े सुखाए।

वह नहीं जानता था कि वह किस टापू पर था। उसकी समझ में नही आ रहा था कि उस टापू पर कोई रहता भी है या टापू पूरी तरह से निर्जन और उजाड़ है। यदि कोई रहता भी है तो यह अनुमान नहीं लगाया जा सकता था कि उस पर रहने वाले लोग कैसे होंगे?

उसे भूख भी लगने लगी थी।

लेकिन खाने को तो वहां कुछ भी नजर नहीं आ रहा था।

वह काफी देर तक वहां बैठा रहा। वह बैठे-बैठे ऊब गया था और अपनी स्थिति पर उसे रोना आ रहा था। तभी उसने एक बड़ी सी मछली को देखा, जो अपना मुंह बाहर निकाले किनारे के पास ही तैर रही थी।

पिनोकियो मछली के पास पहुंचा।

"मछली रानी, मछली रानी, एक बात बताओगी?"

"हां ! हां ! क्यों नहीं? पूछो, क्या बात पूछना चाहते हो?"

"क्या यहां कोई ऐसा गांव या बस्ती है, जहां पर जान जाने का खतरा न हो और कुछ खाने को भी मिल जाए।"

"हां, अपनी नाक की सीध में चले जाओ। कुछ दूर चलने पर तुम्हें एक गांव मिलेगा। वहां तुम्हें कुछ खाने को भी मिल जाएगा और वहां तुम्हारी जान को भी कोई खतरा नहीं होगा।"

"मछली रानी, एक बात और बता दो।"

"पूछो।"

"तुम तो समुद्र में तैरती रहती हो। कहीं तुमने मेरे पापा को भी देखा है?"

"कैसे हैं तुम्हारे पापा?"

"मेरे पापा नाव में बैठे थे। वे बहुत अच्छे हैं, मछली रानी। इतने अच्छे हैं कि संसार में किसी के पापा इतने अच्छे नहीं हैं, लेकिन मैं बहुत खराब हूं।"

"मैंने तुम्हारे पापा को कहीं नहीं देखा, लेकिन...!" मछली ने कहा—"हो सकता है तूफान में तुम्हारे पापा की नाव डूब गई हो और उन्हें किसी मछली ने निगल लिया हो।"

"मछली मेरे पापा को निगल सकती है कहीं?"

"क्यों नहीं। समुद्र में बड़ी-बड़ी मछलियां रहती हैं। कुत्ता मछली तो कई मंजिले मकान के बराबर होती है। उसका मुंह इतना बड़ा होता है कि उसमें पूरी की पूरी रेलगाड़ी समा जाए।

"अरे बाप रे!" पिनोकियो चकित रह गया। फिर उसने मछली की ओर देखा।

"तुम्हारा बहुत-बहुत धन्यवाद। तुमने मेरी बहुत सहायता की है, मछली रानी।"

उसके बाद पिनोकियो ने अपने कपड़े पहने और फिर मछली के बताए अनुसार नाक की सीध में चल दिया।

चलते-चलते वह मेहनती आदमियों के गांव में पहुंचा। यहां सभी बहुत मेहनती थे। हर एक अपने काम में इतना व्यस्त था कि सांस लेने की भी फुरसत नहीं थी।

'यहां खाना कैसे मिले?' पिनोकियो ने सोचा—'खाने के लिए या तो कोई काम किया जाए या फिर भीख मांगी जाए।'

भीख मांगने की बात पिनोकियो को अच्छी नहीं लगी। उसने अपने लिए कोई काम ढूंढने की ही सोची।

वह काम ढूंढने लगा। काम ढूंढते-ढूंढते उसे एक आदमी दिखाई दिया, जो दो गाड़ियां एक साथ खींच रहा था। उनमें कोयला भरा हुआ था। यह बहुत ही मेहनत का काम था। पिनोकियो को यह आदमी बहुत भला लगा। उसने सोचा कि चलो इस आदमी से कुछ मांग ही लिया जाए। वह उस आदमी के पास पहुंचा।

"क्या तुम मुझे दो पैसे दे सकते हो?" पिनोकियो ने पूछा।

"दो पैसे ही क्यों, तुम्हें दो आने मिल सकते हैं। लेकिन...।"

"लेकिन क्या?"

"गाड़ियां खींचने में तुम्हें मेरी मदद करनी होगी।"

"तुम मुझसे यह गधों वाला काम करने के लिए कह रहे हो। नहीं, मैं यह काम नहीं कर सकता।"

"तो फिर जाओ यहां से, तुम्हें कोई पैसा-वैसा नहीं मिलेगा।" उस आदमी ने कहा और फिर पिनोकियो को घूरते हुए अपनी गाड़ियों को लेकर चला गया।

इसके बाद पिनोकियो ने कई आदमियों से भीख मांगी, लेकिन सबने एक ही उत्तर दिया—"तुम्हें शर्म नहीं आती भीख मांगते हुए।"

पिनोकियो ने एक स्त्री से पीने के लिए पानी मांगा, जो दो बाल्टियां उठाकर ले जा रही थी। शायद उस स्त्री को पिनोकियो पर दया आ गई और उसने पिनोकियो को पानी पिला दिया।

"वाह, मेरी प्यास तो बुझ गई।" पिनोकियो ने कहा—"लेकिन मुझे बहुत जोर की भूख लगी है। क्या मुझे कहीं से खाने के लिए रोटी मिल सकती है?"

"मैं तुम्हें पेट-भर खाने को रोटी दे सकती हूं, लेकिन तुम्हें पानी से भरी एक बाल्टी मेरे घर तक पहुंचानी पड़ेगी।"

यह काम पिनोकियो को अच्छा तो नहीं लगा, लेकिन क्या करता, उसे रोटियां जो चाहिए थीं। उसने उस औरत की बात मान ली। शायद वह बहुत दयालु औरत थी।

पानी की बाल्टी सिर पर रखकर पिनोकियो उस औरत के साथ-साथ चलने लगा। उसके घर पहुंचकर पिनोकियो ने पानी की बाल्टी उतारकर रख दी। उस औरत ने खाने की थाली लाकर पिनोकियो के सामने रखी तो पिनोकियो बुरी तरह से खाने पर टूट पड़ा।

वह खाने में इतना व्यस्त हो गया कि उस औरत की ओर से पिनोकियो का

ध्यान ही हट गया। उसने खूब पेट भरकर भोजन किया। फिर उसने अपना चेहरा उठाकर उस औरत की ओर देखा तो चकित रह गया। वह उसे पहचानने की कोशिश करने लगा।

फिर अचानक ही पिनोकियो उस औरत के पैरों से लिपटकर रोने लगा—"मैंने तुम्हें पहचान लिया है।" उसने रोते हुए कहा—"लेकिन तुम मुझे क्यों नहीं पहचान रही बहन। तुम्हारी आवाज बिल्कुल वही है। वैसी ही नीली आंखें। मैं...मैं तुम्हारे लिए बहुत रोया हूं, बहन।"

कुछ पल तक वह चुप रही, फिर उसकी आंखों में भी आंसू आ गए—"हां, मैंने भी तुम्हें पहचान लिया है।" उसने कहा और पिनोकियो को गले लगा लिया।

यह वही जंगल की परी थी, लेकिन अब वह बच्ची नहीं रही थी। वह अब बहुत बड़ी हो गई थी। जैसे पिनोकियो की मां हो।

"तुम तो बहुत बड़ी हो गई, बहन, लेकिन मैं अभी उतना ही छोटा हूं। एक इंच के बराबर नहीं बढ़ा। तुम इतनी बड़ी कैसे हो गई, बहन? और मैं बड़ा क्यों नहीं हुआ?"

"तुम बड़े नहीं हो सकते।"

"लेकिन क्यों?"

"क्योंकि तुम कठपुतले हो और कठपुतले कभी बढ़ते नहीं।"

"नहीं, बहन। मैं कठपुतला बना नहीं रहना चाहता। मैं इस जिंदगी से तंग आ चुका हूं। मैं आदमी बनना चाहता हूं।" पिनोकियो ने रोते हुए कहा।

"लेकिन नहीं बन सकते।"

"पर क्यों?"

"क्योंकि आदमी बनने के लिए पहले अच्छा लड़का बनना पड़ता है, जो कि तुम बन नहीं सकते। उसके लिए बहुत कुछ करना पड़ता है। काम में मन लगाना पड़ता है। पढ़ना पड़ता है। बड़ों का कहना मानना पड़ता है।"

"मैं क्या करूं बहन, पढ़ाई में मेरा दिल नहीं लगता। पूरे बदन में दर्द होने लगता है, लेकिन मैं आदमी बनना चाहता हूं बहन। इसलिए अच्छा लड़का बनूंगा। तुम जो कहोगी, मैं वही करूंगा। मैं तुम्हारी हर बात मानूंगा।"

पिनोकियो की यह बात सुनकर उसकी बहन बहुत खुश हुई। उसने पिनोकियो को गले लगा लिया। फिर अगले दिन से ही पिनोकियो स्कूल जाने लगा।

लेकिन स्कूल में पिनोकियो लड़कों के मनोरंजन का साधन बन गया। उसके साथ पढ़ने वाले लड़के तरह-तरह की शरारतें करके मजा लेते थे। कुछ दिन तो वह यह सब सहन करता रहा, लेकिन एक दिन पिनोकियो ने गुस्से में आकर एक लड़के पर अपनी कोहनी से वार किया और दूसरे को ठोकर मार दी।

दोनों लड़के दर्द से तिलमिला उठे। उसकी चोट बड़ी कठोर थी। आखिर वह लकड़ी का बना हुआ था।



लेकिन इस बात का अच्छा परिणाम निकला। इसके बाद फिर कभी किसी लड़के ने पिनोकियो के साथ शरारत नहीं की।

पिनोकियो अब एक अच्छा लड़का बन गया था। वह पढ़ने में खूब मन लगाता था। बहुत सारे लड़के उसके दोस्त बन गए थे। अध्यापक भी उससे बहुत प्यार करते थे, लेकिन उसे ऐसे लड़कों से दूर रहने के लिए जरूर कहते थे, जो पढ़ाई से जी चुराते थे।

लेकिन पिनोकियो इस बात की परवाह नहीं करता था।

फिर एक दिन पिनोकियो को कुछ दोस्त मिल गए। उन्होंने बड़े उत्साह में पिनोकियो से कहा कि समुद्र के किनारे एक कुत्ता मछली निकली है। वे लोग उसे देखने जा रहे हैं। उन्होंने पिनोकियो से भी चलने के लिए कहा, लेकिन पिनोकियो ने मना कर दिया।

"मैं नहीं जाऊंगा।"

"लेकिन क्यों? तुम कुत्ता मछली देखने का इतना बढ़िया मौका क्यों खोना चाहते हो?"

"मास्टरजी मना करते हैं।"

"अरे तुम भी कहां उस बुड्ढे की बातों में आ गए, पिनोकियो वह तो हमेशा इसी तरह की बातें करता है। उसकी कौन सुनता है?"

पिनोकियो ने फिर मना किया, लेकिन वे लोग बराबर कोशिश करते रहे। अंत में पिनोकियो राजी हो गया।

बस फिर क्या था? पूरी मित्र मंडली समुद्र के किनारे की ओर दौड़ने लगी। उनमें पिनोकियो सबसे आगे था, क्योंकि वह सबसे तेज दौड़ता था।

समुद्र के किनारे पहुंचकर पिनोकियो ने इधर-उधर देखा। उसे कुत्ता मछली के दर्शन नहीं हुए।

"यहां तो कुत्ता मछली कहीं नजर नहीं आ रही।" पिनोकियो ने अपने साथियों से कहा तो वे हंस पड़े।

"कहीं नाश्ता-पानी करने गई होगी। आ जाएगी।"

पिनोकियो हैरत से उनकी ओर देखता रह गया।

असल में वे ऐसे लड़के थे, जो पढ़ाई से जी चुराते थे। पढ़ाई से बचने के लिए ही वे यहां आए थे। वे चाहते थे कि पिनोकियो भी ऐसा ही करे। इसलिए वे पिनोकियो को कुत्ता मछली दिखाने के बहाने यहां ले आए। इतना ही नहीं, वे पिनोकियो का मजाक भी उड़ाने लगे, लेकिन वह उनसे झगड़ा नहीं करना चाहता था, क्योंकि वे कई लड़के थे और पिनोकियो अकेला था।

परंतु वे झगड़े पर उतारू थे। वे पिनोकियो के साथ झगड़ने भी लगे। बात मार-पीट तक जा पहुंची। वे पिनोकियो पर किताबें फेंक-फेंककर मारने लगे।

पिनोकियो अपने आपको बचाता रहा। अंत में एक लड़के ने एक मोटी किताब पिनोकियो पर मारी तो पिनोकियो ने अपने आपको तो बचा लिया, लेकिन उसे बहुत गुस्सा आ गया और उसने वही किताब उठाकर उसी लड़के पर खींच मारी।

बस फिर क्या था?

किताब बहुत भारी थी। किताब लगते ही उस लड़के की चीख निकली और वह गिरकर ढेर हो गया।

ऐसा लगता था जैसे वह मर गया हो। उसके साथी डरकर भाग गए, लेकिन पिनोकियो वहीं खड़ा रहा।

अब वह पछता रहा था कि मास्टरजी के मना करने पर भी वह इनकी बातों में आकर यहां चला आया। उसने इनकी बातों में आकर बहुत बड़ी गलती की है।

वह पानी लाया। फिर पानी के छींटे मारकर उसे होश में लाने की कोशिश करने लगा, लेकिन उस लड़के के जिस्म में कोई हरकत नहीं हुई।

तभी दो सिपाही वहां आ गए। उन्होंने आते ही कहा—"यह क्या हो रहा है? यह कौन है?"

"मेरा ही साथी है।" पिनोकियो ने कहा—"मैं इसकी मदद कर रहा हूं। इसे चोट लग गई है।"

"कैसे लग गई चोट?"

"इस किताब से।"

"और यह किताब तुम्हारी है।" उन्होंने कहा। फिर पिनोकियो की बात सुने बिना ही कहा—"चलो थाने।" और उन्होंने पिनोकियो को पकड़ लिया।

"नहीं ! नहीं।" पिनोकियो रोने लगा—"मैंने कुछ नहीं किया।"

मेरी कोई गलती नहीं हैं, मुझे थाने मत ले जाओ।"

लेकिन उन्होंने पिनोकियो की एक नहीं सुनी। वे उसे पकड़कर थाने ले जाने लगे।

चलते-चलते एक जगह पिनोकियो की टोपी उड़ गई, तो उसने सिपाहियों से कहा—"हुजूर मेरी टोपी उड़ गई। उसे उठा लाने दो।"

"ठीक है। ले आओ टोपी। जल्दी करो।" कहकर उन्होंने पिनोकियो को छोड़ दिया।

पिनोकियो टोपी उठाने के लिए उधर गया, लेकिन फिर वापस आने की बजाय भागने लगा। उन्होंने पिनोकियो को रुक जाने के लिए चेतावनी दी, लेकिन पिनोकियो नहीं रुका। सिपाहियों ने अपना शिकारी कुत्ता उसके पीछे छोड़ दिया।

शिकारी कुत्ता बहुत तेजी से पिनोकियो की ओर दौड़ा, लेकिन दौड़ने में पिनोकियो भी कुछ कम नहीं था। वह इतनी तेजी से दौड़ रहे थे कि रास्ते में धूल उड़ने लगी।

पिनोकियो दौड़ता रहा, दौड़ता रहा, लेकिन शिकारी कुत्ते ने उसका पीछा नहीं

छोड़ा। वह लगातार उसके पीछे लगा रहा। पिनोकियो को लगा कि कुत्ता उसे छोड़ने वाला नहीं है।

अंत में पिनोकियो समुद्र के अंदर पानी में कूद गया तो कुत्ता भी उसके पीछे-पीछे पानी में कूद गया। इस प्रकार पिनोकियो का तो कुछ नहीं बिगड़ा, लेकिन कुत्ता पानी में डूबने लगा। फिर वह अपनी जान बचाने के लिए पिनोकियो की खुशामद करने लगा।

पिनोकियो को शिकारी कुत्ते पर दया आ गई। उसने कुत्ते को डूबने से बचा लिया। पानी से बाहर आकर कुत्ते ने पिनोकियो को नमस्ते करते हुए उसे धन्यवाद दिया।

इस प्रकार उस शिकारी कुत्ते की पिनोकियो से दोस्ती हो गई।

"कभी कोई काम पड़े तो मुझे याद करना।" कुत्ते ने पिनोकियो से कहा और चला गया।

उसके बाद पिनोकियो गांव में पहुंचा। उसे पता चला कि जिस लड़के को चोट लगी थी, वह मरा नहीं, जिंदा है। उसे चोट भी ज्यादा नहीं आई थी।

बहुत मामूली-सी चोट थी।

पिनोकियो फिर अपनी परी बहन के घर के लिए रवाना हो गया।

उस समय रात हो चुकी थी। उस रात मौसम बहुत खराब था। तेज आंधी के साथ पानी भी बरस रहा था।

पिनोकियो घर पहुंचा, लेकिन उसे अपने किए हुए पर इतनी शर्म आ रही थी कि उसकी दरवाजा खटखटाने की हिम्मत नहीं हुई। वह कुछ देर तक यूं ही सोचता रहा।

फिर उसने धीरे-धीरे दरवाजा खटखटाया।

कुछ देर बाद मकान की चौथी मंजिल की एक खिड़की खुली जिसमें से एक घोंघे ने अपना सिर निकालकर बाहर की ओर झांका। घोंघे के सिर पर मोमबत्ती जल रही थी।

"क्या है?" घोंघे ने कहा तो पिनोकियों ने उससे दरवाजा खोलने के लिए कहा।

"ओह, तो यह तुम हो।"

घोंघे ने कहा—"ठीक है, मैं दरवाजा खोलता हूं, लेकिन आराम से खड़े रहो। जल्दबाजी मत करना। तुम तो जानते हो कि मैं कोई काम जल्दबाजी में नहीं करता।" कहकर उसने अपना सिर अंदर कर लिया और खिड़की बंद कर ली।

पिनोकियो दरवाजा खुलने का इंतजार करने लगा। इंतजार करते-करते पिनोकियो को पूरे दो घंटे बीत गए। दरवाजा अब भी नहीं खुला। पिनोकियो ठंड के मारे ठिठुरा जा रहा था। पिनोकियो ने जोर से दरवाजे में ठोकर मारी, लेकिन



यह क्या? उसकी टांग दरवाजे में घुसकर बुरी तरह फंस गई। उसने अपनी टांग को निकालने की बहुत कोशिश की, लेकिन टांग नहीं निकली। पिनोकियो पीड़ा से तड़पता हुआ एक टांग के बल पर खड़ा रहा।

ठीक नौ घंटे बाद जब दरवाजा खुला तो दिन निकल आया था। घोंघे ने दरवाजा खोलकर जब पिनोकियो को इस हालत में देखा तो वह जो से खिलखिलाकर हंस पड़ा।

फिर उसने कहा—"क्यों भाई पिनोकियो, मैंने दरवाजा खोलने में देर तो नहीं लगाई?"

गुस्सा तो बहुत आया पिनोकियो को, लेकिन वह मजबूर था। उसने कहा—"दरवाजा तो तुमने जल्दी खोल दिया, घोंघा भाई, लेकिन मेरी टांग फंसी है। इसे तो किसी तरह निकलवाओ या फिर परी से कह दो।"

"परी से कौन कहे।" घोंघे ने कहा—"वह तो सो रही है। रहा सवाल तुम्हारी टांग फंसी होने का, इसमें तो मैं तुम्हारी कोई मदद नहीं कर सकता भाई। यह तो बढ़ई का काम है। वह या तो दरवाजे को काट देगा या फिर तुम्हारी टांग काटकर बाहर निकाल देगा।"

"तुम इतना भी नहीं कर सकते तो मेरे लिए कुछ खाने को ही ले आओ। मैं भूख से मरा जा रहा हूं।"

"हां। यह काम मैं कर सकता हूं। तुम्हारे लिए खाने को अभी लेकर आता हूं। बस अभी गया और अभी आया।"

घोंघा चला गया।

फिर लगभग तीन घंटे बाद वह वापस लौटा। उस समय वह एक प्लेट में नाश्ते का सामान लिए हुए था। लगता था वह बहुत उम्दा नाश्ता लेकर आया था।

पिनोकियो ने नाश्ते की प्लेट अपने हाथ में ले ली, लेकिन जैसे ही उसने खाना शुरू किया तो उसे रोना आ गया।

नाश्ते का सामान मिट्टी-गत्ते व लकड़ी का बना हुआ था। जो देखने में बहुत अच्छा लग रहा था, लेकिन उसे खाया नहीं जा सकता था। पीड़ा, भूख और गुस्से व थकावट से पिनोकियो बेहोश होकर गिर पड़ा।

पिनोकियो को होश आया तो उसने अपने आपको एक कमरे में बड़े आरामदायक बिस्तर पर लेटे हुए पाया।

परी उस समय उसके पास बैठी हुई थी। होश आने पर परी ने उसकी ओर देखा—"तुमने फिर गलत काम किया पिनोकियो मेरे कहने पर भी तुम नहीं माने। फिर भी इस बार तुम्हें फिर माफ करती हूं, किंतु याद रखना, अगली बार फिर तुमने गलत काम किया या मेरा कहना नहीं माना तो फिर तुम्हें माफ नहीं किया जाएगा।"

पिनोकियो ने वायदा किया कि वह फिर कभी ऐसा गलत काम नहीं करेगा। पिनोकियो उसके बाद बहुत सावधानी से रहने लगा।

वह नियमित रूप से स्कूल जाने लगा। वह मन लगाकर मेहनत के साथ पढ़ाई करता था। वह अपने आपको अच्छा लड़का बनाने की हर संभव कोशिश करता था।

उसका आचरण बहुत सुधर गया था।

फिर एक दिन परी ने उसे खुशखबरी सुनाई—"कल तुम्हारी मनोकामना पूरी हो जाएगी। पिनोकियो तुम कठपुतले से लड़का बनने जा रहे हो।"

पिनोकियो खुशी से झूम उठा। उसने अपने स्कूल के सभी साथियों को इस मौके पर दावत देने की सोची, क्योंकि यह उसके जीवन का सबसे महत्त्वपूर्ण व सबसे ज्यादा खुशी का दिन था।

परी ने भी इसके लिए उसे अनुमति दे दी।

पिनोकियो आज बहुत खुश था। वह अपने सभी दोस्तों को निमंत्रण दे चुका था, लेकिन एक दोस्त अभी बाकी था, जिसे वह निमंत्रण नहीं दे सका था। उसके इस दोस्त का नाम रोमियो था।

पिनोकियो के स्कूल का सबसे शरारती लड़का था, रोमियो, लेकिन उसके साथ पिनोकियो की गहरी दोस्ती थी।

रोमियो बहुत ही दुबता-पतला लड़का था। इसलिए सब इसे सींकिया पहलवान कहकर पुकारते थे।

यह रोमियो ही था, जिसे पिनोकियो अभी तक निमंत्रण नहीं दे सका था। ऐसा नहीं था कि पिनोकियो उसे निमंत्रण देने गया ही नहीं। वह कई बार उसके घर के चक्कर लगा आया था, लेकिन वह घर पर ही नहीं मिला।

खुशी के इस मौके पर पिनोकियो उसे भूलना नहीं चाहता था। इसलिए वह रोमियो की खोज में लग गया, लेकिन रोमियो था कि उसे कहीं मिल ही नहीं रहा था। अंत में पिनोकियो ने उसे ढूंढ ही निकाला। वह एक किसान की झोंपड़ी के पीछे छिपा हुआ था। उसे इस तरह छिपे देखकर पिनोकियो को बहुत आश्चर्य हुआ।

"अरे रोमियो! तुम यहां क्या कर रहे हो?" उसने कहा।

"मैं रात होने का इंतजार कर रहा हूं।" सींकिया पहलवान ने उत्तर दिया।

"रात होने का? क्यों?"

"वास्तव में मैं यहां से भागकर जाना चाहता हूं, एक दूसरे देश में। वह बहुत सुंदर देश है। मूर्ख नगरी।"

"मूर्ख नगरी?"

"हां।"

"लेकिन मैं तो तुम्हें निमंत्रण देने आया था रोमियो।"

"निमंत्रण? कैसा?"

"कल मैं कठपुतले से लड़का बन रहा हूं ना। इसी की खुशी में मैं आज शाम सभी दोस्तों को दावत दे रहा हूं। तुम्हारे घर पर भी कई बार गया था, लेकिन तुम मिले ही नहीं।"

"अरे क्या रखा है इन बातों में, पिनोकियो मुझे तो मूर्ख नगरी में जाना है। तुम नहीं जानते वह कितनी अच्छी जगह हैं। बहुत मजे हैं वहां रहने वालो के। न पढ़ाई की चिंता, न स्कूल का झंझट। खूब खेलो, खाओ, मजे में रहो। कोई कुछ पूछने वाला नहीं। मैं तो भई वहीं जाऊंगा। तुम भी चलो ना।"

"नहीं भई, मैं तो नहीं जाऊंगा।"

"क्यों?"

"परी वहां जाने के लिए मना करेगी।"

"अरे वहां जाने के लिए किसी से पूछने की जरूरत ही क्या है? और फिर हम अकेले ही नहीं हैं और भी बहुत सारे लड़के हमारे साथ जा रहे हैं।"

पिनोकियो पहले तो मना करता रहा, लेकिन अंत में सींकिया पहलवान के साथ वह भी मूर्ख नगरी जाने के लिए राजी हो गया।

सींकिया पहलवान ने बताया कि रात में एक गाड़ी आएगी। उसी में बैठकर हम मूर्ख नगरी चले जाएंगे।

इस तरह वे दोनों रात होने का इंतजार करने लगे।

कुछ ही देर में एक गाड़ी वहां आ गई। उसमें बहुत सारे लड़के बैठे हुए थे। वे सभी मूर्ख नगरी की यात्रा पर निकले थे।

उस गाड़ी को कई रगों के चौबीस गधे खींच रहे थे। सभी गधों ने पैरों में आदमियों वाले जूते पहन रखे थे। इसलिए चलते समय उनके पैरों से कोई आवाज नहीं होती थी। गाड़ी के पहियों पर भी टाट व कपड़े लिपटे हुए थे। उसे एक बड़ी अजीब-सी शक्ल का एक कोचवान हांक रहा था।

वह खूब लंबा-चौड़ा आदमी था, लेकिन उसका जिस्म बहुत पिलपिला था। वह बिल्लियों जैसी आवाज में बोलता था।

निकट आने पर सींकिया पहलवान ने गाड़ी को रुकने का संकेत किया। गाड़ी रुक तो गई, लेकिन कोचवान ने उसी अजीब आवाज में कहा—"तो बच्चू, तुम भी हमारे साथ मूर्ख नगरी जाने का इरादा रखते हो? लेकिन गाड़ी में तो जगह ही नहीं है। बैठोगे कहां?"

"मैं तो यहीं पायदान पर बैठ जाऊंगा।" सींकिया पहलवान ने कहा—"तुम चिंता मत करो।" वह पायदान पर ही बैठ गया।

"तुम भी मूर्ख नगरी चलोगे ना?" कोचवान ने पिनोकियो से पूछा तो पिनोकियो ने एक बार फिर मना किया।

लेकिन इस बार सारे लड़कों ने उसे मनाया तो वह फिर राजी हो गया। गाड़ी में जगह न होने के कारण पिनोकियो से एक गधे पर बैठने के लिए कहा, किंतु गधे पर बैठने की कोशिश करते ही गधे ने पिनोकियो को लात मार दी। इस पर सारे लड़के खिलखिलाकर हंस पड़े।

कोचवान गाड़ी से नीचे आया। वह गधे के कान के पास मुंह लाकर उसे पुचकारने लगा।

उसी समय पिनोकियो गधे पर सवार हो गया। कोचवान ने गधे को पुचकारते हुए उसका कान काट लिया।

पिनोकियो गधे पर बैठ तो गया, लेकिन गधे ने दोबारा भी उसे नीचे गिरा दिया।

कोचवान ने उसका दूसरा कान भी काट लिया। फिर गधे ने आना-कानी नहीं की और पिनोकियो गधे पर सवार हो गया। लड़कों ने तालियां बजाकर पिनोकियो को शाबासी दी और गाड़ी आगे बढ़ गई।

गाड़ी उस अजीब-से देश मूर्ख नगरी पहुंच गई। इस देश में सिर्फ लड़के ही रहते थे, जिनकी उम्र आठ से चौदह साल के बीच में थी। कोई बड़ा बूढ़ा तो वहां ढूंढे से भी नहीं मिलता था।

पिनोकियो ने देखा कि वहां कोई किसी को कहने सुनने वाला नहीं था। जिसके जो जी में आए, करे।

गलियों में हंगामा मचा हुआ था। कोई खेल-कूद में मस्त था तो कोई सड़क पर बीचोबीच लेटकर गाना गा रहा था। यहां न किसी के हंसने पर पाबंदी थी, न रोने पर। कोई काठ के घोड़े पर चढ़कर उसे पीट रहा था तो कोई किसी से मारपीट कर रहा था।

दीवारों पर अजीब से नारे लिखे हुए थे।

'हम पढ़ाई नहीं करेंगे, नहीं करेंगे।'

'खेल कूदकर मस्त बनेंगे, मस्त रहेंगे।'

'मास्टर जी मुर्दाबाद, मुर्दाबाद।'

पिनोकियो व रोमियो के साथ आने वाले सभी लड़के आते ही खेल में मस्त हो गए। कोई झूला झूलने लगा। कोई लट्टू घुमाने लगा तो कोई जोर-जोर से गाकर नाचने लगा।

इस तरह मूर्ख नगरी में उन्होंने अपने ढेरों दोस्त बना लिए। पूरा दिन इसी तरह से खेल कूद में ही बीत जाता था। किसी बात की कोई चिंता ही किसी को नहीं थी।

समय बीतता रहा, बीतता रहा। इसी तरह पिनोकियो को कई महीने गुजर गए

मूर्ख नगरी में, लेकिन एक दिन पिनोकियो के साथ बड़ी दुखद घटना घट गई। वह अपनी टोपी उतारकर अपने सिर पर हाथ फेर रहा था कि उसने देखा कि उसके कान बहुत लंबे-लंबे हो गए थे, एकदम गधों के कान जैसे।

यह देखकर पिनोकियो को बड़ा दुख हुआ। वह जोर-जोर से रोने लगा, लेकिन उसके रोने पर किसी ने ध्यान ही नहीं दिया। वहां कोई किसी दूसरे पर ध्यान नहीं देता था, फिर उसने अपने लंबे-लंबे गधे जैसे कानों को टोपी के नीचे छिपा लिया और अपने दोस्त रोमियो से मिलने के लिए चला गया।

सींकिया पहलवान के पास जाकर पिनोकियो ने देखा कि वह तो उससे भी ज्यादा दुखी था। उसके घुटने में चोट लगी थी और वह दर्द से कराह रहा था। यह देखकर पिनोकियो को आश्चर्य भी हुआ और दुख भी।

फिर दोनों एक दूसरे का दुख बांटने के लिए एक दूसरे के गले मिलकर रोने लगे, लेकिन यह क्या, उनकी तो आवाज ही बदलकर गधों जैसी हो गई थी। वे दोनों रोते हुए ऐसे लग रहे थे, मानों दो गधे रेंक रहे हों।

सींकिया पहलवान के कान भी पिनोकियो की तरह गधों जैसे लंबे-लंबे हो गए थे।

वे अपनी टोपियां उतारकर एक दूसरे की ओर देखते तथा फिर रोने लगते। तभी किसी ने बाहर से दरवाजा खटखटाया। फिर एक आवाज सुनाई दी—"मैं कोचवान हूं। जल्दी दरवाजा खोलो।"

लेकिन उन्होंने दरवाजा नहीं खोला और जब उसके बार-बार कहने पर भी उन्होंने दरवाजा नहीं खोला तो कोचवान दरवाजा तोड़कर अंदर आ गया।

कोचवान उन्हें देखकर बहुत खुश हुआ।

"मैंने तुम्हारी आवाज सुन ली थी, लड़को। इसलिए चला आया।" कहकर कोचवान ने उनकी पीठ पर हाथ फेरा।

पीठ पर हाथ फेरते ही वे सचमुच के गधे बन गए।

फिर वह उन दोनों को पकड़कर ले गया। उन्हें नहला-धुलाकर तैयार किया और बाजार ले गया। इन गधों को खरीदने वाले ग्राहक जल्दी ही मिल गए।

सींकिया पहलवान को एक किसान ने खरीद लिया। उसका गधा मर गया था, इसलिए उसे गधे की जरूरत थी। जबकि पिनोकियो को एक सर्कस कंपनी के मालिक द्वारा खरीद लिया गया।

वास्तव में कोचवान बड़ा दुष्ट जादूगर था। वह दुनिया में घूम-घूमकर इसी तरह लड़कों को बहकाता और यहां मूर्ख नगरी में ले आता था। फिर जब ये खेल-कूदकर गधे बन जाते थे तो उन्हें बाजार में ले जाकर बेच देता था और खूब पैसे कमाता था। इस तरह वह दुष्ट जादूगर बहुत धनवान हो गया।

सींकिया पहलवान के साथ तो भगवान ही जाने क्या हुआ, लेकिन अपना पिनोकियो तो बड़ी भारी मुसीबत में फंस गया था। सर्कस कंपनी का मालिक दिन-भर



उसे दूसरे जानवरों के साथ नचाता रहता था। शाम को उसे खाने के लिए थोड़ा-सा भूसा या सूखी घास दे दी जाती थी। उसे यही खाना पड़ता था। शुरू-शुरू में एक दिन उसने भूसा खाने से इनकार कर दिया था। उस समय पिनोकियो पर इतनी मार पड़ी कि उसके बाद फिर कभी उसने भूसा या सूखी घास खाने से मना नहीं किया।

पिनोकियो अब बहुत पछताता था। वह अपने आपको कोसता रहता था कि वह कहां आ फंसा, लेकिन अब पछताने से क्या होता था। यह सब तो उसे भुगतना ही था।

सर्कस कंपनी के मालिक ने उसे पीट-पीटकर सर्कस के कुछ करतब सिखा दिए थे। जब वह कुछ करतब सीख गया तो उसे सर्कस के दूसरे जानवरों में शामिल कर लिया गया।

फिर एक दिन सर्कस की घोषणा की गई।

शहर-भर में सर्कस के पोस्टर लगे। उन पोस्टरों में विशेष बात यह थी कि उनमें लोगों को पिनोकियो नाम के गधे के करतब दिखाने की बात कही गई थी।

फिर एक तम्बू में सर्कस का आयोजन किया गया।

उस दिन भारी संख्या में दर्शक सर्कस देखने के लिए इकट्ठे हुए थे। उसका कारण यही था कि लोग पिनोकियो नाम के गधे के करतब देखने के लिए उतावले हो रहे थे।

अंदर भीड़ इतनी थी कि तिल रखने की भी जगह नहीं बची थी। सभी दर्शक अपनी-अपनी जगह बैठ गए तो सर्कस मालिक स्टेज पर आया। उसने अपने सर्कस के खेलों की तारीफ करते हुए एक लम्बा-चौड़ा लैक्चर दिया।

उसके बाद पिनोकियो को स्टेज पर लाया गया तो दर्शकों ने तालियां बजाकर उसका जोरदार स्वागत किया। सर्कस का मालिक भी बहुत देर तक दर्शकों के सामने पिनोकियो की तारीफ करता रहा।

पिनोकियो को उस दिन खूब सजाया गया था।

उसकी पीठ पर नई-नकोर जीन कसी हुई थी। उसकी लगाम को पॉलिश से चमकाया गया और उसके पैरों को काले रंगों से पोतकर उन पर बहुत ही सुंदर रंग-बिरंगे रिबन बांधे गए थे।

इस तरह पिनोकियो की सजावट उस दिन देखने लायक थी।

सर्कस मालिक ने पिनोकियो की ओर देखते हुए कहा—"देखो पिनोकियो, कितने लोग तुम्हारे करतब देखने के लिए बैठे हुए हैं। सभी को सलाम करो।"

पिनोकियो ने अपने अगले घुटने मोड़कर दर्शकों को सलाम किया।

फिर मालिक ने कोड़ा फटकारते हुए उसे धीमी चाल से चलने का हुक्म दिया। उसके बाद तेज चाल से, फिर और तेज, फिर बहुत तेज रफ्तार से दौड़ाया गया।

जब वह तेज रफ्तार से दौड़ रहा था तभी मालिक ने अचानक पिस्तौल निकाली और पिनोकियो पर फायर कर दिया। पिनोकियो दौड़ते-दौड़ते गिर पड़ा, जैसे उसे गोली लगी हो और वह मर गया हो।

लेकिन अगले ही पल वह उठ गया।

असल में उसे गोली नहीं लगी थी, बल्कि यह उसका खेल था। उसने मरने का अभिनय किया था।

दर्शकों को पिनोकियो का यह खेल बहुत पसंद आया। उसके इस खेल से खुश होकर दर्शक देर तक तालियां बजाते रहे। पिनोकियो को शाबाशी देते रहे।

पिनोकियो ने अपनी गरदन उठाकर इधर-उधर देखा। तभी दर्शकों में उसे एक बड़ी सुंदर औरत बैठी नजर आई। उसके गले में एक लाकेट पड़ा था, जिस पर उसी की तस्वीर बनी हुई थी। उस समय की तस्वीर, जबकि वह गधा नहीं था, बल्कि कठपुतला था।

पिनोकियो ने फौरन अपनी तस्वीर को पहचान लिया। उस सुंदर औरत को भी पहचान लिया। वह औरत उसकी परी बहन थी।

पिनोकियो उसे जोर-जोर से पुकारने लगा, लेकिन वहां उसकी आवाज को पहचानने वाला कौन था, वह तो गधे की आवाज थी। लोगों ने समझा कि गधा खुश होकर रेंक रहा है।

लेकिन सर्कस मालिक को पिनोकियो की यह हरकत कतई पसंद नहीं आई, क्योंकि उसके इस प्रकार रेंकने से दर्शकों में हुल्लड़ मच गया था और अव्यवस्था फैल गई थी। मालिक ने गुस्से में आकर चाबुक की मूठ पिनोकियो की नाक पर जोर से मारी।

पिनोकियो दर्द से तड़प उठा। उसने जीभ निकालकर अपनी नाक को चाटा, लेकिन दर्द कम नहीं हुआ। फिर उसने देखा कि अब परी भी अपनी जगह पर नहीं थी। वह वहां से उठकर जा चुकी थी।

पिनोकियो बड़ा दुखी हुआ। उसकी आंखों में आंसू आ गए, लेकिन किसी ने इस ओर ध्यान नहीं दिया।

खेल फिर चालू हो गया।

इस बार सर्कस मालिक ने चाबुक फटकारते हुए पिनोकियो को एक गोल घेरे के अंदर से कूदने का हुक्म दिया।

पिनोकियो कूद तो गया, लेकिन उसका एक पैर घेरे में फंसा रह गया। वह धड़ाम से जमीन पर गिरा और उसके पैर में बहुत चोट आई। पिनोकियो पैर की इस चोट के कारण लंगड़ा हो गया।

खेल समाप्त हुआ तो सर्कस मालिक ने सोचा कि यह गधा तो अब लंगड़ा हो गया, इसलिए मेरे काम का नहीं रहा। इसे बेच देना चाहिए।

मालिक उसे बेचने के लिए बाजार में ले गया, लेकिन कोई उसे खरीदने को तैयार नहीं था। फिर एक आदमी ने उसे केवल आठ आने में खरीद लिया। वह खरीददार एक ढोलिया था। उसका ढोल फट गया था। वह पिनोकियो को मारकर उसके चमड़े से नया ढोल बनाना चाहता था।

पिनोकियो ने यह सुना तो वह कांपकर रह गया, लेकिन वह अब कर ही क्या सकता था?

ढोलिया उसे लेकर चला गया। पिनोकियो डर के मारे चीख रहा था, दया की भीख मांग रहा था, लेकिन ढोलिया उसकी आवाज कैसे समझ सकता था। वह तो यही समझ रहा था कि गधा चलने में आना-कानी कर रहा है। वह उसे पीट-पीटकर ले जाने लगा।

फिर वह उसे लेकर समुद्र किनारे पहुंचा। उसने पिनोकियो के गले में एक भारी पत्थर बांधा और एक दूसरी रस्सी उसके गले में बांधकर उसे पानी में डुबा दिया। रस्सी का दूसरा सिरा वह स्वयं पकड़कर बैठ गया। ढोलिए का विचार था कि पानी में डूबे रहने के कारण वह थोड़ी देर में मर जाएगा। फिर वह आसानी से उसकी खाल उतार लेगा।

वह कुछ देर तक पिनोकियो को यूं ही पानी में डुबोए रहा।

फिर उसने सोचा कि वह अब तक मर गया होगा, तब उसने बहुत जोर लगाकर उसे बाहर खींचा, लेकिन यह क्या, वह तो मामूली-सा जोर लगाने से ही ऊपर आ गया। इस तरह संतुलन बिगड़ने के कारण ढोलिया गिरते-गिरते बचा, लेकिन उसकी ओर देखते ही ढोलिया आश्चर्य में पड़ गया।

रस्सी में गधा नहीं, बल्कि एक कठपुतला लटक रहा था।

"क्यों रे, तू कौन है? मेरा गधा कहां है?"

"वह गधा मैं ही तो हूं।" पिनोकियो ने मुस्कराते हुए कहा।

"देख कठपुतले—मेरे साथ मजाक मत कर। मैं बहुत गुस्से वाला आदमी हूं। जल्दी बोल, मेरा गधा कहां गया। मैंने उसे आठ आने में खरीदा था।"

"मैंने कहा ना, वह गधा मैं ही हूं। अब तुम मुझे बाहर निकालकर मेरे गले की रस्सी खोल दो तो मैं तुम्हें पूरी कहानी बताऊं।"

ढोलिए ने उसे पानी से बाहर निकाला। फिर उसके गले की रस्सी खोल दी—"अब बताओ, मेरा गधा कहां गया?"

"पहले मैं कठपुतला ही था, मेरी एक परी बहन थी। मैंने उसका कहा नहीं माना। मैंने पढ़ने की बजाए खेलकूद में ज्यादा रुचि लेनी शुरू कर दी। मैं पढ़ाई चोर दोस्तों की बातों में आकर मूर्ख नगरी चला गया। वहां खेलकूद कर मैं गधा बन गया, लेकिन अब जबकि तुमने मुझे पानी में डुबो दिया तो मछलियों ने मेरे गधे के रूप को खा लिया और मैं फिर से कठपुतले के अपने असली रूप में आ गया।"

"वह सब तो ठीक है, लेकिन मेरे आठ आनों का क्या होगा। खैर, लकड़ी के भाव तो तुम बिक ही जाओगे। उसी से मैं अपने आठ आने वसूल कर लूंगा। तुम्हें किसी लकड़ी वाले को बेचकर।" ढोलिए ने कहा।

"बड़े आए मुझे बेचने वाले।" पिनोकियो ने व्यंग्यपूर्वक कहा --"जाओ, जाओ, अपना रास्ता नापो।"

"कठपुतले, तेरी यह मजाल?" कहकर ढोलिया उसे पकड़ने के लिए झपटा।

कठपुतला खिल-खिलाकर हंसा और ढोलिया उसे पकड़ पाता, उससे पहले ही वह पानी में कूद गया।

पानी में वह दूर तक तैरता चला गया। फिर उसने पीछे मुड़कर देखा तो उसके होश उड़ गए। एक बहुत ही विशाल कुत्ता मछली अपना मुंह खोलकर उसी की ओर आ रही थी। पिनोकियो बुरी तरह घबरा गया। वह अपनी जान बचाने के लिए बहुत तेजी से तैरने लगा, लेकिन मछली की रफ्तार तो उससे दस गुना तेज थी।

देखते-देखते वह कुत्ता मछली उसके बहुत करीब आ गई।

फिर उसने जोर से सांस खींची तो ढेर सारा पानी उसके मुंह की ओर बहता चला गया और उस पानी के साथ पिनोकियो भी उसके मुंह में चला गया।

बाद में मछली ने पानी उछाल दिया और पिनोकियो उसके पेट में चला गया तथा बेहोश हो गया।

पिनोकियो को होश आया तो वह एक अजीब दुनिया में पहुंच चुका था। उसके चारों ओर अंधकार छाया हुआ था तथा बार-बार हवा के बहुत ही तेज झोंके आ रहे थे जो कि मछली के फेफड़ों से आ रहे थे। पिनोकियो को अब सारी बात याद आ चुकी थी कि वह किस प्रकार कुत्ता मछली के पेट में आ गया था।

उसने अपनी हिम्मत कायम रखने की बहुत कोशिश की, लेकिन ऐसा नहीं हो सका। उसकी हिम्मत जवाब दे गई और वह डरकर जोर-जोर से चीखने लगा।

"बचाओ...बचाओ। अरे कोई मुझे इस मुसीबत से निकालो। भगवान के लिए मेरी मदद करो।"

तभी एक छोटी मछली उसके करीब आई।

"तुम पागल हो गई हो क्या, इतना भी नहीं जानती कि तुम्हारी मदद करने यहां कौन आ सकता है? अरे हां, यह तो बताओ कि तुम कौन-सी मछली हो?" उस छोटी मछली ने कहा।

"मैं मछली नहीं हूं।" पिनोकियो ने कहा।

"मछली नहीं तो फिर कौन हो?"

"मैं एक कठपुतला हूं।"

"लेकिन तुम कुत्ता मछली के पेट में कैसे आ गए। अब यहां से तो निकलना संभव नहीं होगा।"

"फिर क्या होगा?" पिनोकियो ने रोते हुए कहा।

"होना क्या है, मछली हमें पचाएगी और हम मर जाएंगे।"

"नहीं, नहीं, मैं इस तरह मरना नहीं चाहता।"

"तुम्हारे चाहने से क्या होता है?" उस मछली ने कहा।

उसी समय पिनोकियो ने कुछ दूरी पर कोई चीज देखी, जो चमक रही थी। पिनोकियो उधर ही बढ़ गया। करीब पहुंचने पर पिनोकियो ने जो देखा, उसे देखकर वह भौंचक्का

रह गया। वह सोच नहीं पा रहा था कि मछली के पेट में यह क्या हो रहा है?

वहां एक टेबल पर एक मोमबत्ती जल रही थी। उस पर एक बूढ़ा आदमी बैठा छोटी-छोटी मछली खा रहा था। पिनोकियो उसके करीब पहुंचा तो उसके मुंह से खुशी के मारे चीख निकल गई। वह दौड़कर उस आदमी से लिपट गया।

"पापा ! पापा ! मैंने तुम्हें पा लिया। अब मैं तुम्हें कहीं नहीं जाने दूंगा।"

बूढ़े ने चौंकते हुए उसकी ओर देखा, जो कि वास्तव में जेपेत्तो ही था।

"अरे, पिनोकियो यह मैं क्या देख रहा हूं? तुम यहां कैसे?"

पिनोकियो ने उसे बताया कि वह किस प्रकार कुत्ता मछली के पेट में आ गया। यही नहीं, उसने शुरू से अंत तक अपनी सारी कहानी जेपेत्तो को बताई।

बाद में जेपेत्तो ने भी उसे बताया कि उस समय उसने पिनोकियो को पहचानकर अपनी छोटी नौका किनारे तक लाने की बहुत कोशिश की, लेकिन उस भयंकर तूफान ने ऐसा नहीं होने दिया। उसकी नौका डूब गई और उसे कुत्ता मछली ने निगल लिया।

उसी समय एक दूसरी घटना घटी, कुत्ता मछली ने एक व्यापारिक जहाज को भी निगल लिया। उसके नाविक तो किसी तरह बच गए, लेकिन पूरा जहाज सामान सहित मछली के पेट में चला गया। जहाज में शराब की बोतलें व खाने-पीने का बहुत सारा सामान भरा था। तब से अब तक वह उसी से गुजारा कर रहा था।

"लेकिन अब सब कुछ समाप्त हो गया है। बस यह मोमबत्ती ही बची है, जो थोड़ी देर में समाप्त हो जाएगी और यहां अंधेरा फैल जाएगा।" जेपेत्तो ने बताया।

"तब तो हमें जल्दी ही यहां से निकल जाना चाहिए, पापा। मैं अंधेरे में नहीं रह सकता। अंधेरे में मेरा जी बहुत घबराता है।"

"यह सोचने से कोई लाभ नहीं, पिनोकियो" जेपेत्तो ने निराशा से कहा—"यहां से निकलना संभव नहीं।"

"नहीं पापा, हम यहां से जरूर निकलेंगे। आप तैरना नहीं जानते तो क्या हुआ? इसमें चिंता करने की कोई जरूरत नहीं है। मैं पानी में नहीं डूब सकता, कठपुतला जो हूं। तुम मेरी पीठ पर बैठ जाना। इस तरह हम किनारे पर पहुंच जाएंगे।"

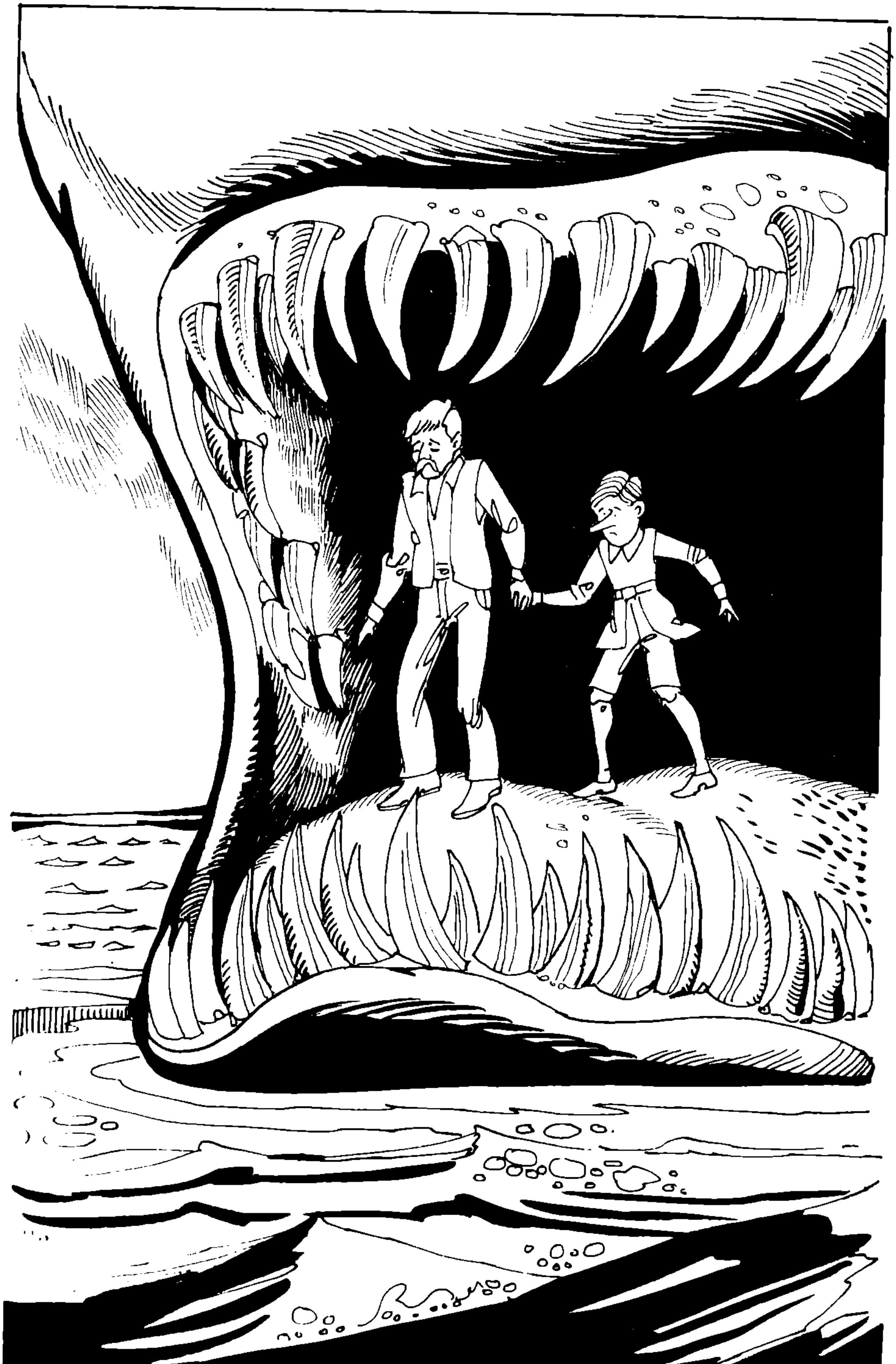
"लेकिन बेटा।"

"तुम चलो पापा, लाओ, यह मोमबत्ती मुझे दो।" कहकर पिनोकियो ने मोमबत्ती ले ली और आगे-आगे चलने लगा। अंत में जेपेत्तो को भी उसके पीछे-पीछे आना पड़ा।

वे कुत्ता मछली के मुंह में पहुंचे।

वह बूढ़ी कुत्ता मछली उस समय सो रही थी। उसका मुंह खुला हुआ था। उसके दांत बहुत बड़े-बड़े व भयंकर थे तथा जीभ ऐसी जैसे कोई लम्बी सड़क हो।

वे उसकी जीभ पर चलते हुए सावधानी से आगे बढ़े, ताकि कुत्ता मछली की नींद न खुल जाए। उन्होंने आगे बढ़कर उसके खुले मुंह से झांककर देखा तो खुला आसमान नजर आया।



फिर पिनोकियो ने जेपेत्तो को अपनी पीठ पर लादा और समुद्र में कूद गया। उस समय मछली गहरी नींद में सो रही थी। उसे इस बात की भनक तक नहीं लगी कि उसका शिकार उसके मुंह से निकल गया।

पिनोकियो बुरी तरह से थक चुका था।

किनारा दूर-दूर तक भी नजर नहीं आ रहा था। जेपेत्तो भी उसकी पीठ पर बैठा कांप रहा था। वह या तो डर रहा था या फिर उसे जुकाम हो गया था।

अब तक पिनोकियो उसे हिम्मत बंधाता रहा था। शायद उसका विचार था कि उसे जल्दी ही किनारा मिल जाएगा। इसी आशा में वह अब तक तैरता रहा था।

लेकिन अब वह थककर चूर हो गया था, उसकी हिम्मत जवाब दे गई थी।

"अब मैं और नहीं तैर सकता, पापा।" उसने कहा—"मैं डूब रहा हूं। अब हम नहीं बचेंगे।"

"घबराओ मत।" तभी पिनोकियो ने एक मधुर स्वर सुना—"मैं तुम्हारी मदद करूंगी।"

"लेकिन तुम कौन हो?" पिनोकियो ने पूछा।

"मैं वही मछली हूं, जो तुम्हें कुत्ता मछली के पेट में मिली थी। तुम्हारे साथ मैं भी उस समय बाहर आ गई थी, जब वह कुत्ता मछली गहरी नींद में सो रही थी।"

पिनोकियो बहुत खुश हुआ। उसने कहा—"किंतु तुम हमारी मदद कैसे करोगी?"

६"तुम दोनों मेरी पूंछ पकड़ लो। मैं बहुत जल्दी तुम्हें किनारे तक पहुंचा दूंगी।"

फिर पिनोकियो व जेपेत्तो ने उस मछली की पूंछ पकड़ ली और वह उन्हें लेकर किनारे की ओर तैरने लगी।

जल्दी ही उस मछली ने दोनों को किनारे पर पहुंचा दिया।

पिनोकियो ने अपनी जान बचाने के लिए उस छोटी मछली का धन्यवाद किया। फिर बड़े ही भावभीने वातावरण में उन्होंने मछली से विदा ली।

उन्हें विदा करने के बाद मछली ने पानी में डुबकी लगा दी।

पिनोकियो अपने बूढ़े पापा जेपेत्तो को लेकर आगे बढ़ा। उस समय दिन का उजाला फैलने में ज्यादा देर नहीं थी। आसमान सुर्ख हो रहा था और वह सूर्य के उगने का संकेत दे रहा था। पिनोकियो कुछ दूर ही चला था कि उसे वही बिल्ली और लोमड़ी मिलीं। लोमड़ी अब सचमुच लंगड़ी हो गई थी और बिल्ली सचमुच अंधी। वे अब बहुत ही दयनीय हालत में थीं। उन्हें खाना भी नसीब नहीं होता था। कोई उन्हें भीख देने को तैयार नहीं था। लोमड़ी को तो खाने के लिए एक दिन अपनी पूंछ तक काटकर बेचनी पड़ी थी।

उन्होंने पिनोकियो को देखते ही कहा—"पिनोकियो भैया, पिनोकियो भैया, हमारी मदद करो। हम बड़ी मुसीबत में हैं। हम भूखी हैं, हमारे ऊपर रहम करो।"

"हम सचमुच अंधी और लंगड़ी हो गई हैं, पिनोकियो भैया।"

"वह तो होना ही था। तुमने वह कहावत तो सुनी ही होगी कि चोरी का माल मोरी में जाता है। तुमने जैसा किया, अब उसका फल भुगतो। मैं अब तुम्हारी कोई मदद नहीं करूंगा।"

कहकर पिनोकियो अपने बीमार पिता को सहारा देता हुआ आगे बढ़ गया।

रास्ते में उन्हें एक झोंपड़ी मिली। पिनोकियो ने उस झोंपड़ी का दरवाजा खटखटाया।

"कौन?" अंदर से एक बड़ी महीन-सी आवाज आई।

"हम मुसीबत में हैं।" पिनोकियो ने कहा—"कृपया हमें शरण दे दो।"

"ठीक है, अंदर चले आओ।"

पिनोकियो ने दरवाजा खोला तथा दोनों अंदर चले गए। पिनोकियो ने देखा कि अंदर वही झींगुर बैठा हुआ था। पिनोकियो ने उसे फौरन पहचान लिया।

"अरे तुम?"

"हां, मैंने भी तुम्हें पहचान लिया। तुम वही हो, जिसने मुझे हथोड़ी से मार दिया था, लेकिन मैं बुराई का बदला बुराई से नहीं देना चाहता। तुम जब तक चाहो, यहां रह सकते हो। यह झोंपड़ी मुझे नीली आंखों वाली एक सुंदर परी ने दी है।"

"परी, वह तो मेरी बहन है। मैं उससे मिलना चाहता हूं। कब आएगी वह?"

झींगुर ने इसका उत्तर नहीं दिया।

पिनोकियो झोंपड़ी से बाहर आया। बाहर एक माली काम कर रहा था। वह माली के पास पहुंचा।

"माली चाचा, मेरे पापा बहुत बीमार हैं। क्या तुम उनके लिए थोड़ा-सा दूध दे सकते हो?"

"दूध तो तुम्हें मिल सकता है, लेकिन तब जबकि मेरे पौधों में सौ बाल्टी पानी डाल दोगे। पहले यह काम मेरा गधा किया करता था, लेकिन वह बहुत कमजोर होकर अब बीमार पड़ गया है, वह बस मरने ही वाला है।"

"ठीक है माली चाचा। मैं तुम्हारा यह काम कर दूंगा, लेकिन क्या तुम मुझे अपना वह गधा दिखा सकोगे?"

"हां, हां। क्यों नहीं? आओ मेरे साथ।"

फिर माली उसे अंदर ले गया।

वह गधा और कोई नहीं, बल्कि रोमियो नाम का वही सींकिया पहलवान था, जो उसी के साथ गधा बन गया था और फिर उसी के साथ बाजार में भी बिका था, लेंकिन अब तो उसकी चंद सांसे ही बची थीं। उसका अंतिम समय आ चुका था। वह अंतिम सांसे ले रहा था। पिनोकियो भी अब उसके लिए कुछ नहीं कर सकता था।

वह वापस आ गया।

फिर उसने माली का बताया हुआ सारा काम किया। माली ने बदले में उसे एक गिलास दूध दे दिया। दूध उसने अपने बीमार पापा को पिला दिया।

उस दिन के बाद तो पिनोकियो खूब मेहनत करने लगा। वह अच्छे बच्चों की तरह अपने पापा की भी खूब सेवा करता था।

पिनोकियो टोकरियां बनाने का काम करने लगा। वह टोकरियां बनाता और बाजार में बेच आता। इससे उसे कुछ पैसे मिल जाते। वह अपने इसी काम में मेहनत व लग्न से लगा रहा।

धीरे-धीरे उसके पास काफी पैसे इकट्ठे हो गए।

एक दिन उसने अपनी सारी जमा-पूंजी को गिना। फिर अपने पापा से बोला—"पापा, मैं बाजार जा रहा हूं। मेरे पास कुछ पैसे हैं। इन पैसों से मैं अपने लिए एक बढ़िया-सी टोपी खरीदूंगा। मुझे जूते और एक कोट भी खरीदना है। उन्हें पहनकर तो मैं बहुत अच्छा लगूंगा। बिल्कुल किसी साहब की तरह लगूंगा न पापा?"

"हां बेटे।"

उसके पापा ने उसे इजाजत दे दी तो वह पैसे लेकर बाजार की ओर चल दिया।

रास्ते में उसे वही घोंघा मिला, जो परी के मकान में रहता था। पिनोकियो ने उसे पहचान लिया।

"अरे, घोंघा भाई, तुम? मेरी परी बहन कहां है? मैं उससे मिलना चाहता हूं।"

पिनोकियो की यह बात सुनकर घोंघा बहुत उदास हो गया। फिर उसने उदास स्वर में ही कहा—"अरे तुम परी की बात कर रहे हो। वह बेचारी तो बड़ी मुसीबत में आ गई है। वह तो अपने लिए खाने तक का प्रबंध नहीं कर सकती। इस समय वह बहुत बीमार है और अस्पताल में पड़ी है।"

पिनोकियो ने यह सुना तो उसका मन दुख से भर गया।

"हे भगवान! मेरी बहन इतनी भारी मुसीबत में है और मुझे इसका पता तक नहीं चल सका। घोंघा भाई, मेरे पास इस समय कुछ पैसे हैं। मैं बाजार से अपने लिए कुछ सामान खरीदने जा रहा था, लेकिन अब मैं सामान नहीं खरीदूंगा। वह तो बाद में भी खरीदा जा सकता है। यह रुपये तुम परी बहन को दे दो। इस समय उसे इनकी बड़ी जरूरत होगी। मैं भी अपनी बहन से मिलना चाहता हूं। उसे देखना चाहता हूं, लेकिन इस समय मैं नहीं जा सकता, क्योंकि मेरे पापा बहुत बीमार हैं। मुझे उनकी भी देखभाल करनी है, लेकिन तुम मेरी बहन से कहना कि एक दिन मैं उसे देखने जरूर आ जाऊंगा।"

घोंघे ने वे पैसे ले लिए।

घोंघा अपना काम कभी जल्दीबाजी में नहीं करता था, लेकिन उस समय उसने

जरा भी सुस्ती नहीं दिखाई। पैसे लेकर वह बहुत ही तेजी से चला गया।

पिनोकियो बिना कुछ खरीददारी किए ही घर वापस आ गया। उसे लगा कि अब उसे और भी ज्यादा मेहनत करने की जरूरत है। उस दिन वह देर रात तक काम करता रहा। हमेशा की अपेक्षा उसने दोगुना काम किया। उसने दो गुना टोकरियां बनाई। उसे अगले दिन उन टोकरियों को बेचने जाना था, क्योंकि उसे पैसों की जरूरत थी।

देर रात तक काम् करने के बाद वह सो गया। वह काम करते-करते थक भी गया था। इसलिए उसे तुरंत ही गहरी नींद आ गई।

नीली आंखों वाली वह सुंदर परी रात को पिनोकियो के सपने में आ गई। वह पिनोकियो का माथा चूमते हुए कह रही थी—"मैं तुमसे बहुत खुश हूं। शाबाश पिनोकियो, मैंने तुम्हारी पिछली सारी गलतियों को क्षमा कर दिया है। तुम्हारी तरह माता-पिता की सेवा करने वाले बच्चों को माफ कर दिया जाता है। मैं तुमसे एक अच्छा लड़का बनने की आशा करती हूं। हमेशा खुश रहो, पिनोकियो अच्छा, अब मैं चलती हूं।"

उसी घड़ी पिनोकियो की नींद खुल गई।

पिनोकियो को इस सपने पर बड़ी हैरानी हो रही थी, लेकिन सबसे ज्यादा हैरानी तो उसे तब हुई, जब उसने यह देखा कि अब वह कठपुतला नहीं रहा। वह कठपुतले से लड़का बन चुका था, सचमुच का लड़का।

लेकिन अविश्वसनीय नजारा तो तब उसके सामने आया, जब उसने अपने आसपास देखा। वह जो कुछ देख रहा था, उस पर सचमुच ही उसे विश्वास नहीं हो रहा था।

उसे अच्छी तरह याद था कि रात में वह एक टूटी-फूटी, घास-फूस की झोंपड़ी में एक साधारण-सी चटाई पर सोया था, लेकिन अब वह झोंपड़ी एक छोटे-से बहुत ही सुंदर सजे हुए कमरे में परिवर्तित हो चुकी थी।

जिस साधारण-सी चटाई पर सोया था, उसकी जगह अब वह एक बहुत ही नरम, मुलायम बिस्तर पर बैठा हुआ था। बिस्तर के सिरहाने ही उसकी नाप के सुंदर-सुंदर व कीमती वस्त्र जूतों सहित रखे थे।

कई पल तक वह फटी-फटी आंखों से यह सब देखता रहा।

फिर वह बिस्तर से उठा। उसने वह कपड़े पहने, जो उसके सिरहाने रखे थे। वह कपड़े उसे एकदम फिट आए। उसने फिर वह टोपी पहनी तथा जूते पहनकर दर्पण के सामने जाकर खड़ा हो गया।

वह अपने इस नए व सुंदर रूप को पहचान ही नहीं पा रहा था, लेकिन उसका दिल खुशी से झूम रहा था। फिर उसने अपने नए कोट की जेब में हाथ डाला तो उसे लगा जैसे उसकी जेब में कुछ रखा हो। उसने उसे बाहर निकाल लिया।

वह एक छोटी-सी खूबसूरत व चमकदार डिबिया थी। पिनोकियो ने उस डिबिया को खोलकर देखा तो उसमें सोने की चालीस मोहरें रखी हुई थीं। डिबिया के ऊपर सुनहरे अक्षरों में कुछ शब्द लिखे थे—'परी बहन की ओर से मेरे प्यारे छोटे भाई पिनोकियो के लिए एक छोटी सी भेंट।'

सोने की मोहरें शायद पिनोकियो के उन पैसों के बदले में थीं, जो उसने घोंघे के माध्यम से परी को भिजवाए थे।

फिर पिनोकियो ने अपने पापा के बारे में सोचा—'जाने मेरे पापा इस समय कहां होंगे? चलकर देखता हूं।'

उसे कहीं खुट-खुट की आवाज सुनाई दी। वह दौड़ता हुआ दूसरे कमरे में पहुंचा। वहां जेपेत्तो अपने काम में व्यस्त था। वही पुराना, लकड़ी के खिलौने बनाने का काम।

"पापा...! पापा...! मुझे देखो पापा।" कहते हुए वह जेपेत्तो से चिपट गया—"देखो पापा अब मैं कठपुतला नहीं रहा। मैं सचमुच का लड़का बन गया हूं, लेकिन यह सब कैसे हो गया पापा?"

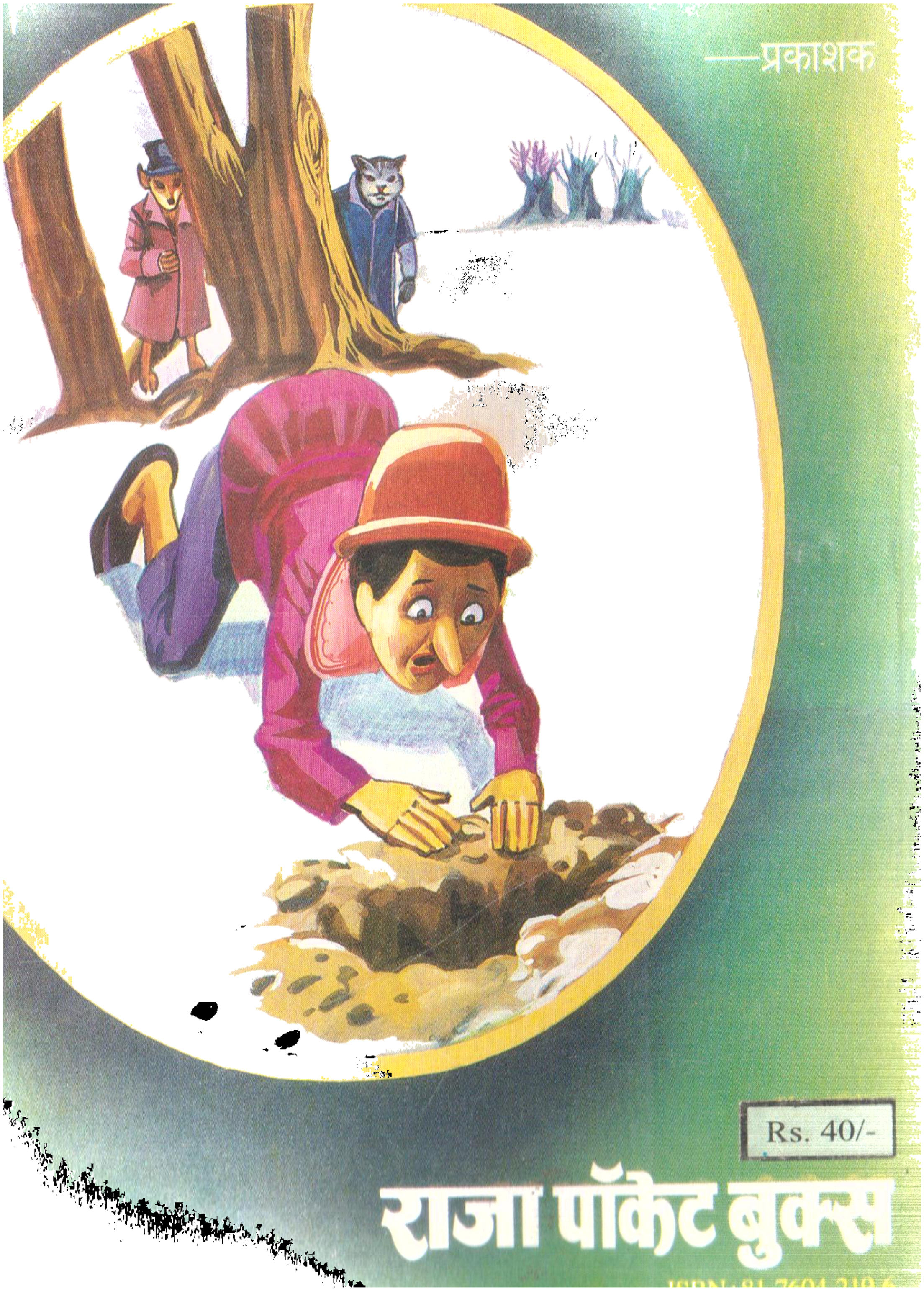
"यह सब तुम्हारे ही कारण हुआ है, बेटे।"

"मेरे कारण? मेरे कारण कैसे?"

"बुरे लड़के जब बुराई छोड़कर अपने उन गलत कामों पर अफसोस करते हैं और अच्छे लड़के बनने की कोशिश करते हैं तो उनका भाग्य इसी तरह जाग उठता है। उनके घरों में हंसी-खुशी व धन की वर्षा होने लगती है और उनका घर खुशियों से भर जाता है।"

फिर पिनोकियो ने कुर्सी के सहारे टिके एक कठपुतले की ओर देखा। उसकी गरदन लटकी हुई थी तथा हाथ पांव टेढे-मेढे थे। पिनोकियो एक बार उसे देखकर हंसा।

फिर उसने जेपेत्तो की ओर देखते हुए कहा—"पहले मैं कितना भद्दा लगता था, पापा। उस कठपुतले की तरह, लेकिन अब कितना अच्छा लग रहा है। बिल्कुल एक अच्छे लड़के की तरह। मैं बहुत खुश हूं, पापा...बहुत खुश।"


—प्रकाशक
Rs. 40/-
राजा पॉकेट बुक्स